खंड

1

संस्कृत गद्य-साहित्य का इतिहास

खण्ड 1 का परिचय

संस्कृत गद्य-साहित्य पाठ्यक्रम का यह प्रथम खण्ड है। इस खण्ड में 4 इकाइयाँ हैं। पाठ्यक्रम की ये सभी इकाइयाँ संस्कृत गद्य-साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित हैं। इन इकाइयों में गद्य साहित्य के उद्भव और विकास के क्रम का विशद् विवेचन किया गया है। 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए वासवदत्ता, कादम्बरी, दशकुमारचरित, शिवराजविजय जैसी कृतियों का प्रणयन करके संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान बनाने वाले सुबन्धु, बाण, दण्डी, अम्बिकादत्त व्यास जैसे रचनाकारों के व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य का वर्णन किया गया है।

संस्कृत साहित्य में गद्य के विभिन्न रूपों के दर्शन होते हैं जैसे कथा, आख्यायिका, नीतिकथा आदि। इस खण्ड में आप संस्कृत गद्य के दो रूपों नीतिकथा और लोककथा के उद्भव और विकास के क्रम का अध्ययन करेंगे तथा प्रमुख कथाओं पंचतन्त्र, हितोपदेश, सिंहासनद्वात्रिंशिका आदि का परिचय प्राप्त करेंगे।

इस खण्ड की प्रत्येक इकाई में इकाई से सम्बन्धित कठिन शब्दावली दी गई है जिनका अर्थ जानना आपके लिए नितान्त अपेक्षित है, इन शब्दों का अर्थ जानकर आप अपने भाषिक सामर्थ्य में वृद्धि कर सकते हैं। इकाइयों के अन्त में उपयोगी पुस्तकों की सूची दी गई है। आप इन पुस्तकों का अध्ययन कर सम्बन्धित विषय की और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

शुभकामनाओं के साथ

इकाई 1 संस्कृत गद्य-साहित्य का उद्भव और विकास

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- काव्य की गद्यविधा के स्वरूप को जान सकेंगे।
- गद्यकाव्य के उद्भव एवं विकास से परिचित होंगे।
- वैदिक, पौराणिक, शास्त्रीय एवं साहित्यिक गद्य के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- गद्यकाव्य के भेदों को समझ सकेंगे।
- प्रमुख गद्यकाव्यों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में दैनिक जीवनोपयोगी व्यवहार हेतु भावों के संचार का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है भाषा। भाषा के गद्य एवं पद्य दो प्रकार हैं। गद्य में व्यक्ति

अपने भावों को अत्यन्त सरल और सुस्पष्ट तरीके से अभिव्यक्त कर सकता है। गद्य में छन्द, गण, लय, मात्रा, चरण आदि का बन्धन नहीं होता। गद्यकाव्य में कथा तथा आख्यायिका का भी समावेश किया जाता है। इतिवृत्त वर्णन, यात्रावृत्तान्त, निबन्ध, अनुभव, विषय-प्रस्तुतीकरण इन सभी प्रसङ्गों में अनुभवकर्ता अपने अनुभव गद्य के माध्यम से सरलता से कर पाता है। प्रस्तुत इकाई में हम गद्य साहित्य का स्वरूप, उद्भव एवं विकास, गद्यकाव्य के भेदादि के विषय में अध्ययन करेंगे।

1.2 गद्य का स्वरूप

गद्य शब्द गद् धातु (गद् वक्तायां वाचि) से यत् प्रत्यय लगाकर निष्पन्न होता है। इसका सूक्ष्म अर्थ है भावों की अभिव्यक्ति की स्पष्ट प्रक्रिया। दीर्घकाल पर्यन्त गद्य अपने मूल स्वरूप में रहा। कालान्तर में इसमें काव्यात्मक रूप आ गया जिसमें पद्यकाव्यवत् कुछ विशेषताएं सम्मिलित हो गयीं यथा अलङ्कार सौष्ठव, सरस पदावली, समासयुक्त शैली, भावगत चमत्कृति, रसगत चमत्कार आदि। गद्य के इस काव्यशास्त्रीय/साहित्यशास्त्रीय स्वरूप को गद्यकाव्य कहा जाने लगा। काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के समावेश सहित जब गद्य का विकास होने लगा तो गद्यकाव्य की रचनाएं इतनी जटिल होने लगीं कि अष्टम शताब्दी में तो गद्य रचना करना कवि की कुशलता के परीक्षण की कसौटी बन गया इसीलिये कहा भी गया है – **'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'।** संस्कृत भाषा में गद्य-साहित्य का अपना अलग ही वैशिष्ट्य है। गद्य का प्रथमतया प्रयोग विधा के रूप में संस्कृत में ही हुआ है। संस्कृत गद्य का वैशिष्ट्य है सार में अपनी बात कह देना। किसी विचार को अन्य भाषा में कहने के लिए लम्बे वाक्य की अपेक्षा रहती है जबकि संस्कृत में अल्पसमासा अथवा दीर्घसमासा शैली के माध्यम से एक पद में ही कहा जा सकता है।

गद्य-साहित्य को द्विधा विभक्त किया जाता है –

1) प्राचीन संस्कृत गद्य-साहित्य

2) आधुनिक संस्कृत गद्य-साहित्य

प्राचीन संस्कृत गद्य-साहित्य में सुबन्धु की वासवदत्ता ही प्रथम गद्य कृति के रूप में स्वीकृत है। कवि के गद्य में उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग तो सौन्दर्य वृद्धि करता ही है साथ ही श्लेष अलंकार की योजना भी कवि के गद्य में चमत्कार उत्पन्न करती है। सुबन्धु के पश्चात् बाणभट्ट ने अपनी अद्वितीय रचना कादम्बरी में शब्दप्रयोग पटुता और कथा-प्रणयन शैली का जैसा विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया वह आज भी कवि समाज में प्रशंस्य है। शब्दों का वर्ण्य-विषयानुसार प्रयोग बाणभट्ट का वैशिष्ट्य है। अर्थ की नूतनता, स्वभावोक्ति की चारुता, श्लेष की स्पष्टता तथा अक्षरों की विकटबन्धता कादम्बरी का वैशिष्ट्य है। अलंकारों की योजना भी बाणभट्ट की रचना में बड़ी स्वाभाविक है। यथा –

'क्रमेण च कृतं मे वपुषि वसन्त इव मधुमासेन, मधुमास इव नवपल्लवेन, नवपल्लव इव कुसुमेन, कुसुम इव मधुकरेण, मधुकरेण इव मदेव नवयौवनेन पदम्।'

इसी प्रकार परिसंख्या अलंकार में चारुता भी बाण का वैशिष्ट्य है –

'यत्र च महाभारते शकुनविधः, पुराणे वायुप्रलपितम्, वयः परिणामे द्विजपतनम्, उपवनचन्दनेषु जाड्यम्, अग्नीनां भूतिमत्त्वम्, एणकानां गीतव्यसनम्, शिखण्डिनां नृत्यपक्षपातः, भुजंगमानां भोगः, कपीनां श्रीफलाभिलाषः मूलानामधोगतिः।'

प्राचीन गद्य-साहित्य की पृष्ठभूमि में प्रणय-वर्णन और आश्रयदाता राजा के गुण-यश वर्णन का प्राधान्य रहा है किन्तु आधुनिक कथा-साहित्य का सर्जक कवि सामाजिक-राजनैतिक

दशा-वर्णन, भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का चित्रण और नारी की दशा निरूपण में प्रवृत्त दिखाई पड़ता है। वस्तु-विवेचन की दृष्टि से और शैली की दृष्टि से आधुनिक गद्य-साहित्य अनेकविध वर्ण्य-विषयों का वर्णन करता है। गद्य-साहित्य की कथा, लघुकथा, उपन्यास, यात्रा-साहित्य, जीवनवृत्त वर्णन आदि अनेक विधाएं हैं।

आधुनिक गद्य-साहित्य में कथा, लघुकथा साहित्य का प्राधान्य है। विद्वन्मूर्धन्य श्री विश्वेश्वर पाण्डेय की मन्दारमंजरी प्रौढ़ गद्य-शैली में रची गई गद्य कृति है। कथा प्रेरणा देने वाली तथा मार्गदर्शक होती है। इक्कीसवीं सदी के अन्तिम दशक में संस्कृत गद्य़-साहित्य में लघुकथा रचना का प्रयास किया गया। सर्वप्रथम (शिवराजविजयकार) अम्बिकादत्त व्यास ने यह प्रयास किया। उनके 'रत्नाष्टकम्' नाम से प्रकाशित कथा-संग्रह में हास्यरस प्रधान और उपदेश प्रधान आठ कथाओं का संकलन किया गया।

1.3 गद्यकाव्य का उद्‌भव

गद्यकाव्य का प्रथमतया अवतरण देववाणी संस्कृत में ही हुआ है। वैदिक संहिताओं को सम्पूर्ण विश्व की प्रथम पुस्तक कहा गया है। मैक्समूलर ने भी यह बात कही है कि इस विश्व की लाइब्रेरी की प्रथम पुस्तक वेद है और यजुर्वेद संहिता में गद्य का प्रथम बार प्रयोग निर्विरोध स्वीकृत है। यजुर्वेद में गद्य का भाग पद्य से किंचित् भी न्यून नहीं है। वेद की अन्य काठक, मैत्रायणी आदि संहिताओं में भी गद्य का प्रयोग प्रचुरता से देखने को मिलता है। अथर्ववेद का तो छठां भाग पूरा ही गद्यात्मक है। ब्राह्मण ग्रन्थ तो पूर्णतया गद्यमय ही प्राप्त है। यज्ञ यागादि वर्णन में प्रक्रिया वर्णन होने के कारण गद्य ही उसकी प्रस्तुति का सरल एवं सटीक माध्यम हो सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल में ही गद्यकाव्य का उद्‌भव हो चुका था।

1.4 गद्यकाव्य का विकास

हम यह पढ़ चुके हैं कि गद्यकाव्य वैदिक काल से ही प्रतिष्ठित रूप में विकसित हो चुका था। वैदिक युग से लेकर मध्यकाल तक गद्य के विकास का क्रम अत्यन्त मनोरम है। गद्य के स्वरूप को देखते हुए उसे द्विधा विभाजित किया जा सकता है। वैदिक काल का सीधा-सादा बोलचाल का गद्य तथा लौकिक संस्कृत का परिष्कृत, दीर्घसमासशैली वाला गूढ़ गद्य। वैदिक गद्य में हम छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग देखते हैं उनमें भी समासों की न्यूनता होती है, सरल पदावली होती है, अत्यधिक अलङ्कारों का प्रयोग बलात् नहीं किया जाता। इसके विपरीत लौकिक गद्य समासबहुल और क्लिष्ट व गम्भीर पदावली वाला होता है।

प्रकरण प्रस्तुति की दृष्टि से दोनों ही प्रकार के गद्यों में प्रवाहमयता है। वैदिक गद्य में यतोहि यज्ञादि क्रियाओं का विधान उद्देश्य होता था, वहाँ न तो पाण्डित्य प्रदर्शन अपेक्षित था, न उचित। यदि क्लिष्टपदावली के प्रयोग से यज्ञक्रिया समझाई जाए और अध्येता समझ ना पाए तो यज्ञक्रिया में त्रुटियाँ हो जायेंगी और अपूर्व फल की प्राप्ति नहीं हो पाएगी। वहाँ पाण्डित्यप्रदर्शन निष्फल होता है, इस प्रकार से ना तो पुण्य प्राप्त होता है न सुख।

इसके विपरीत लौकिक साहित्य में गद्य का प्रांजल और परिष्कृत रूप प्राप्त होता है। दर्शन के विभिन्न ग्रन्थों में यथा शाङ्करभाष्य में गद्य अत्यन्त प्रौढ़ शैली में निबद्ध है। आचार्य शंकर के गद्य का सौन्दर्य अपूर्व है। उदाहरण के लिये –

'सर्वो हि पुरोऽवस्थिते विषये विषयान्तरमध्यवस्यति, युष्मत्प्रत्ययापेतस्य च प्रत्यगात्मनोऽविषयत्वं ब्रवीषि। उच्यते – न तावदयमेकान्तेनाविषयः, अस्मत्–प्रत्ययविषयत्वात्।'

लौकिक संस्कृत में गद्य सारगर्भित, प्रौढ़ तथा परिष्कृत हो गया इसी कारण इसे गद्यकाव्य कहा जाने लगा। हालांकि इस गद्यकाव्य में काव्य के गेयात्मक, लयात्मक, पद्यात्मक होने की अनिवार्यता नहीं होती है तथापि सुन्दर शैली के प्रयोग से, विभिन्न अलङ्कारों के प्रयोग से, वैदर्भी, गौडी और पांचाली रीति के प्रयोग से इसका सौन्दर्य पद्य से कम चमत्कार उत्पन्न नहीं करता। इस कारण गद्य को भी काव्य कहा जाने लगा।

पद्य तो लयात्मक, गेयात्मक होने के कारण प्रस्तुति में रोचक लगता ही है किन्तु गद्य में रोचकता लाना रचयिता के कौशल का प्रमाण होता है। अपनी बात को आलङ्कारिक तरीके से बिना किसी यति-गति-लय के, बिना छन्दबन्धन के कहना गद्य का सौष्ठव है।

इस प्रकार वैदिक काल के सरल गद्य से धीरे-धीरे अपने प्रकृष्ट रूप को धारण करता हुआ लौकिक गद्य परिष्कृत और गम्भीर है।

1.4.1 वैदिक गद्य

गद्य का प्रथमतया प्रयोग यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है। यजुर्वेद में गद्य का ही प्रयोग है इसके लिये कहा भी गया है –

'अनियताक्षरावसानं यजुः' अर्थात् जहाँ पर अक्षरों के अवसान नियत ना हों, अक्षरों की संख्या हेतु कोई बन्दिश ना हो, यति, गति, लय की बाध्यता ना हो, वह यजुर्वेद है। **'गद्यात्मको यजुः'** यजुर्वेद का अधिकतम अंश गद्यरूप में ही प्राप्त है। गद्य होते हुए भी उसकी शैली सरल है तथापि लालित्य में न्यूनता नहीं है।

वैदिक संहिताओं सहित ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यक ग्रन्थों आदि में गद्यकाव्य के अनेक प्रयोग प्राप्त हैं। यथा अथर्ववेद में –

''व्रात्य आसीदीयमान एव स प्रजापति स्मैरयत्। स प्रजापतिः सुवर्णमात्मानमपश्यत्, तत् प्रजनयत्। तदेकमभवत्, तल्ललाममभवत्, तन्महदभवत्, तज्ज्येष्ठमभवत्। तद्ब्रह्माभवत्, तत् तपोऽभवत्, तत् सत्यमभवत्, तेन प्रजायत। (अथर्ववेद, का. 15 सू. 1)

ब्राह्मण ग्रन्थों में भी गद्य के अत्यन्त रमणीय प्रयोग बहुलता से प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिये –

''यत्र नाऽन्यत् पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद् विजानाति तद् भूमा। यत्रान्यत् पश्यति अन्यच्छृणोति अन्यद् विजानाति तदल्पं यो वै भूमा तदमृतमय यदल्पं तन्मर्त्यम्'' (छान्दोग्योपनिषद्, 324)

इन उदाहरणों से यह तो स्पष्ट है कि वैदिक कवि गद्य का सरल और सहज स्वरूप अंगीकार करते हैं। शब्दाडम्बर में उनकी श्रद्धा नहीं है। उपनिषदों में वाक्यों में प्रांजलता और शब्दप्रवाह का माधुर्य गद्य को पद्य से भी अधिक चमत्कृत करने वाला सिद्ध कर देता है यथा भृगु ऋषि जब अपने पुत्र वरुण के समक्ष ब्रह्म जैसे गम्भीर विषय को प्रस्तुत कर रहे थे तब उनके वाक्यों में प्रवाहपूर्ण गति एवं भावगाम्भीर्य का अद्भुत संगम दर्शनीय है –

''नमो ब्रह्मणे, नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु, तद वक्तारमवतु, अवतु माम, अवतु वक्तारम्।''

1.4.2 पौराणिक गद्य

गद्य-लेखन की सरल और सहज परम्परा पौराणिकों ने भी स्वीकार की। वस्तुतः पौराणिक गद्य लौकिक गद्यबन्धों के सोपानभूत हैं। कहीं-कहीं पुराणों में भी अलङ्कारों का पक्षपात दृष्टिगत होता है तथापि प्रसादोपेत भाषा से पौराणिक कवि समस्त गद्य के सौन्दर्य को अलंकृत करता है। विष्णुपुराण का एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है –

''यथैव व्योम्नि वह्निपिण्डोपमं त्वमहमपश्यं तथैवाद्याग्रतो गतमप्यत्र भगवता किंचिन् प्रसादीकृतम्। विशेषमुपलक्षयामीत्युक्ते भगवता सूर्येण निजकण्ठा दुन्मुच्यस्यमन्तकं नाम महामणिवरमवतार्य एकान्ते न्यस्तम्।।'' (विष्णुपुराणम्, 4. 13.34)

1.4.3 शास्त्रीय गद्य

वैदिक काल के अनन्तर गद्य-साहित्य के विकास में दर्शन-प्रस्थानों का भी बहुत योगदान रहा। अर्थ की अभिव्यक्ति को लक्ष्य करके प्रवृत्त इन दर्शनग्रन्थों में यद्यपि शब्द-सौन्दर्य और साहित्यिक-सौन्दर्य का अभाव होता है। तथापि इनकी भावाभिव्यंजकता कहीं भी बाधित नहीं होती। जयन्त भट्ट जैसे कुछ प्रबुद्ध लेखक नीरस विषय में भी किसी संवादात्मकता को उत्पन्न कर देते हैं।

महर्षि पतंजलि के भाष्य में, शबरस्वामी के शबरभाष्य में, शंकराचार्य के ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य में, जयन्त भट्ट की न्यायमंजरी में गद्य का वैलक्षण्य दृष्टिगत होता है। शास्त्रीय गद्य के उदाहरण में ध्वनिकार आचार्य आनन्दवर्धन का ध्वन्यालोक, अभिनवगुप्त की टीकायें, सायणाचार्य का वेदभाष्य उत्कृष्ट गद्य के उदाहरण हैं।

1.4.4 साहित्यिक गद्य

साहित्यिक गद्य का प्रारम्भ तो ऐतिहासिक गद्यकाव्य की आत्मभूत आख्यायिकाओं से ही हो चुका था। आख्यायिकाओं (वासवदत्ता, सुमनोत्तरा, भैमरथी आदि) के पश्चात् कथायें और सूक्तियाँ भी इसमें श्रीवृद्धि करने लगीं। साहित्यिक गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण रुद्रदामन के शिलालेख (गिरिनार अभिलेख) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त प्रशस्ति में भी प्राप्त है। इस गद्य का विकसित रूप आचार्य दण्डी, सुबन्धु, बाण आदि की उत्कृष्ट रचनाओं में देखा जा सकता है।

गद्य-साहित्य की सबसे रोचक प्रस्तुति होती है कथा साहित्य में। वैसे तो पुराण-साहित्य में भी आख्यानकथा आदि प्राप्त हैं तथापि सुबन्धु की वासवदत्ता नाम की कथारचना ही संस्कृत साहित्य में प्रथम कथा के नाम से जानी जाती है।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

   i) विश्व की प्रथम पुस्तक है –

      क) वेद ख) उपनिषद्

      ग) ब्राह्मण ग्रन्थ घ) पुराण

ii) गद्यं कवीनां .... वदन्ति। उचित पद है –

क) निर्वाणं ख) निकषं

ग) निर्यातं घ) आत्मा

iii) गद्य शब्द धातु से बना है–

क) गद् ख) पठ्

ग) गम् घ) भू

iv) .... गद्यात्मक है –

क) ऋग्वेद ख) यजुर्वेद

ग) सामवेद घ) अथर्ववेद

2) नीचे दिये गये कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (X) कथन का चयन कीजिये –

i) विश्वेश्वर पाण्डेय की मन्दारमंजरी में प्रौढ़ गद्य है – ( )

ii) वैदिक गद्य प्रौढ़ शैली में निबद्ध है – ( )

iii) गद्य सर्वप्रथम संस्कृत भाषा में लिखा गया – ( )

अभ्यास प्रश्न

1) गद्यसाहित्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिये।

2) गद्यसाहित्य के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिये।

1.5 गद्यकाव्य के भेद

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में काव्यस्वरूप निरूपण प्रसंग में काव्य के दो भेद बताए हैं– दृश्य काव्य तथा श्रव्य काव्य। दृश्य काव्यों में नाटक, प्रहसन आदि रूपकों तथा उपरूपकों का विशद् विवेचन है। श्रव्य काव्यों का पुनः द्विधा विभाग किया गया – पद्यकाव्य तथा गद्यकाव्य। गद्यकाव्य को परिभाषित करते हुए कहा – वह शब्दार्थ योजना जो छन्दोबद्ध नहीं होती, वह गद्य है। **'वृत्तगन्धोज्झितं गद्यम्'** और उस गद्य के चार प्रकार बताए गए– (1) मुक्तक (2) वृत्तगन्धि (3) उत्कलिकाप्राय और (4) चूर्णक।

वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं मुक्तकं वृत्तिगन्धि च।।330।।

भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकं च चतुर्विधम्।

इन भेदों का कथन रचनाशैली, समासशैली, पदसमावेश आदि के आधार पर किया गया है।

1) **मुक्तक** – प्रथम भेद मुक्तक वह गद्य है जिसकी रचना असमस्त पदों में की जाती है। छोटे-छोटे पदों और वाक्यों से मण्डित सरल और सरस पदावली युक्त रचना मुक्तक कहलाती है। उदाहरण –**''गुरुर्वचसि पृथुरसि''** अर्थात् वाणी में गुरुता रखने वाला तथा पृथु के समान बलशाली। प्रस्तुत उदाहरण में स्पष्ट है कि गुरुर्वचसि तथा पृथुरसि दोनों पद मुक्त हैं। इनको अन्य पद की कोई अपेक्षा नहीं है। मुक्त होते हुए भी इनका प्रयोग सुन्दर लग रहा है अतः यहाँ मुक्तक गद्यकाव्य है।

2) **वृत्तगन्धि** – 'वृत्तगन्धि' जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है वृत्त की गन्ध हो जिसमें। वृत्त अर्थात् छन्द, गन्ध अर्थात् प्रतीति। गद्य का वह प्रकार जिसमें वृत्तों के अंश यत्र-तत्र प्रतीत हुआ करते हैं वह वृत्तगन्धि कहलाता है। यथा –

'समरकण्डूलनिविडभुजदण्डकुण्डलीकृतकोदण्डशिंजिनीटंकारोज्जागरितवैरिनगर'

प्रस्तुत वृत्तगन्धि के उदाहरण में 'कुण्डलीकृतकोदण्ड' अंश पूर्णतया अनुष्टुप् छन्द के एक चरण में नियमशः घटित हो रहा है। दूसरा 'समरकण्डूल' अंश में यदि पूर्व में दो अक्षर और होते तो यह अंश भी अनुष्टुप् के एक चरण को पूरा करता। अतः कुछ-कुछ अंश जब वृत्तबद्ध होते हैं तो ऐसा गद्य 'वृत्तगन्धि' कहलाता है।

3) **उत्कलिकाप्राय** – गद्यकाव्य का तीसरा भेद उत्कलिकाप्राय कहा गया है जिसका तात्पर्य है गद्य का वह भाग जो लम्बे-लम्बे समस्त पदों में रचा गया होता है। यथा – **'अणिसविसुमरणिसिदसरविसरविदलिदसमरपरिगदपवरपरवल'** प्रस्तुत गद्यांश में दीर्घसमासयुक्त पद हैं तथापि अनिश, विसुमर, निशित, शर, विसर, विदलित, समर, परिगतप्रवर, प्रबल आदि पद स्पष्ट हैं। अतः इस प्रकार के दीर्घ और समस्तपदों में रचा गया गद्यकाव्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है।

4) **चूर्णक** – गद्यकाव्य का चतुर्थ भेद है चूर्णक। जिस गद्य रचना में अल्पसमासा शैली हो अर्थात् जिसमें छोटे-छोटे पदों का उपनिबन्धन किया गया हो। यथा –

'गुणरत्नसागर! जयदेवनागर! कामिनीमदन! जनरंजन!' प्रस्तुत उदाहरण में स्वल्पसमासयुक्त पदों का प्रयोग किया गया है। अतः यहाँ गद्य का चूर्णक भेद है।

आचार्य विश्वनाथ ने इन भेदों की परिभाषा का कथन एक श्लोक में किया है।

आद्यं समासरहितं वृत्तभागयुतं परम्।
अन्यत् दीर्घसमासाढ्यं तुर्यं चाल्पसमासकम्।। साहित्यदर्पण – 6.331

आचार्य विश्वनाथ ने गद्यकाव्य के अवान्तर भेदों को भी स्पष्ट किया है। कथा और आख्यायिका इसके अन्य भेद हैं।

कथा –

कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्।
क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद्वक्त्रापवक्त्रके।
आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्तनम्।।

अर्थात् गद्यकाव्य का एक प्रभेद कथा है। जिसमें रसयुक्त इतिवृत्त की रचना होती है। कथा में कहीं-कहीं आर्या छन्द, कहीं वक्त्र, अपरवक्त्र छन्दों में भी रचना होती है। कथा के आरम्भ में नमस्कारात्मक मंगलाचरण किया जाता है। दुर्जननिन्दा तथा सज्जनप्रशंसा सम्बन्धी पद्यों का निबन्धन भी इसमें किया जाता है। बाणभट्ट की कादम्बरी इसका उदाहरण है।

आख्यायिका –

आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशानुकीर्तनम्।
अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित्।।
कथांशानां व्यच्छेद आश्वास इति बध्यते।
आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित्।।
अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम्।

आख्यायिका को भी कथा की भाँति गद्यकाव्य का एक प्रभेद कहा गया है। इसमें प्रायः कथा की ही विशेषताएं रहती हैं। कवि अपने वंश का अनुकीर्तन करता है। अन्य कवियों की चर्चा

भी प्रसंगानुसार करता रहता है। इसमें पद्यसूक्तियाँ भी रहती हैं। आख्यायिका में कथांशों का विभाग 'आश्वास' नाम से किया जाता है। आर्या, वक्त्र, अपवक्त्र किसी एक छन्द के द्वारा वर्णनीय विषय की जानकारी भी दी जाती है। यथा – 'हर्षचरितम्'।

गद्य के कथा और आख्यायिका दो भेद काव्यादर्श, काव्यालंकार आदि ग्रन्थों में भी स्वीकृत हैं। ऐतिहासिक विषय पर आख्यायिका तथा पूर्णतः काल्पनिक विषय पर कथा आधारित होती है।

1.6 प्रमुख गद्यकाव्यों का परिचय

प्रस्तुत इकाई के इस अंश में हम संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध गद्यकाव्यकारों की महत्त्वपूर्ण गद्य रचनाओं का सिंहावलोकन करेंगे।

1.6.1 वासवदत्ता

गुणाढ्य की बृहत्कथा पर आधारित कथानक को आधार बनाकर सुबन्धु ने वासवदत्ता की रचना की। इसमें कन्दर्पकेतु और वासवदत्ता की प्रणयकथा निबद्ध है।

राजकुमार कन्दर्पकेतु प्रातःकालीन स्वप्न में एक रूपवती युवती को देखकर अपने मित्र मकरन्द के साथ उसके अन्वेषण हेतु राजधानी से निकलता है। रात्रि विश्राम के समय एक पर्वत की उपत्यका में एक वृक्ष के नीचे अपना पड़ाव डालता है। रात्रि के समय आपस में बात करते हुए शुक-दम्पती के वार्तालाप से कन्दर्पकेतु को पता चलता है कि कुसुमपुर के राजा की कन्या वासवदत्ता ने स्वप्न में कन्दर्पकेतु नामक राजकुमार को देखा है और उसी से वह परिणय करना चाहती है। दैववशात् यह शुक-दम्पती वही है जिसे वासवदत्ता ने कन्दर्पकेतु को खोजने भेजा है। इसके बाद कुसुमपुर में दोनों का मिलन होता है।

इस बीच कन्दर्पकेतु और वासवदत्ता का जादुई घोड़े पर बैठकर भाग जाना, विन्ध्याटवी आकर रहना, कन्दमूलादि लेने वासवदत्ता का वन को जाना, ऋषि के शाप से शिला में परिवर्तित होना, कन्दर्पकेतु का विरह के योग में आत्महत्या का प्रयास करना, आकाशवाणी से पुनः मिलन की घोषणा सुनकर आश्वस्त होना, वासवदत्ता से पुनः मिलन होना, राजधानी आकर सुखपूर्वक वास आदि विषय वर्णित हैं।

1.6.2 दशकुमारचरित

गद्यकवि दण्डी द्वारा रचित दशकुमारचरित रोमांचक आख्यानों वाला एक गद्यकाव्य है। यह तीन खण्डों में विभाजित है। पूर्वपीठिका, दशकुमारचरित और उत्तरपीठिका। दशकुमारचरित चौदह उच्छ्वासों में विभक्त है। पूर्वपीठिका में पाँच, दशकुमारचरित में आठ तथा उत्तरपीठिका में एक उच्छ्वास है। पूर्वपीठिका के पाँच उच्छ्वासों में अवन्तिसुन्दरी की कथावस्तु वर्णित की गई है। मध्यभाग के आठ उच्छ्वासों में आठ राजकुमारों का चरित्र वर्णन प्राप्त है और उत्तरपीठिका में दो कुमारों का वर्णन प्राप्त है।

मगध के राजा राजहंस मालवनरेश से पराजित होकर वन में चले जाते हैं। वहाँ उनकी रानी राजकुमार राजवाहन को जन्म देती है। इसी समय सम्राट राजहंस के चार मन्त्री भी एक-एक पुत्ररत्न को प्राप्त करते हैं। कालान्तर में अन्य पाँच राजकुमार भी वन में राजा राजहंस के पास लाए जाते हैं और इन सभी दसों कुमारों का पालन-पोषण तथा प्रशिक्षण एकसाथ किया जाता है। वयस्क होने पर राजवाहन अपने साथियों के साथ दिग्विजय हेतु प्रस्थान करते हैं। भाग्यवशात् ये सभी अलग-अलग दिशाओं में चले जाते हैं। दैवयोग से ही

पुनः इनका मिलन होता है और ये सभी अपने साथ बीती घटनाओं को सुनाते हैं। इन्हीं आपबीती घटनाओं का वर्णन दशकुमारचरित का वर्ण्य-विषय है।

1.6.3 कादम्बरी

कादम्बरी का वर्ण्य-विषय गुणाढ्य की बृहत्कथा से लिया गया है। प्रियछात्रों! इस कथा को पढ़ने से पूर्व आपको यह जान लेना आवश्यक है कि इस कथा में तीन जन्मों की कथा आपस में गुंथी हुई है। इसका नायक प्रथम जन्म में चन्द्रमा, द्वितीय में चन्द्रापीड तथा तृतीय में शूद्रक बना है। प्रथम जन्म का पुण्डरीक, द्वितीय जन्म में वैशम्पायन तथा तृतीय जन्म में शुक बना है। कथा तीन भागों में विभक्त है – कथामुख, पूर्वभाग तथा उत्तर भाग।

कथामुख में एक चाण्डालकन्या विदिशानरेश शूद्रक की राजसभा में आकर एक बोलने वाला तोता भेंट करती है। इसमें शूद्रक को शुक अपने जीवनवृत्त के विषय में बताता है।

पूर्वभाग में शुक कथा सुनाता है। तारापीड एवं विलासवती को तपस्या से चन्द्रापीड नामक पुत्र उत्पन्न होता है। शुकनास के वैशम्पायन नामक पुत्र हुआ। चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय शुकनास ने उपदेश दिया। युवराज चन्द्रापीड के दिग्विजय हेतु जाने पर मार्ग में महाश्वेता से भेंट हुई। महाश्वेता ने बताया कि उसका प्रेमी पुण्डरीक उसकी अभिलाषा में कामपीड़ा से दिवंगत हो गया। वहाँ महाश्वेता चन्द्रापीड को कादम्बरी से मिलवाती है। राजकार्य से चन्द्रापीड लौटता है किन्तु वैशम्पायन को सेना के साथ वहाँ छोड़ आता है।

बहुत दिनों तक वैशम्पायन के ना लौटने पर चन्द्रापीड उसे खोजने पुनः वहाँ आता है। महाश्वेता से पूछने पर ज्ञात होता है कि वैशम्पायन महाश्वेता पर आसक्त हो गया था अतः महाश्वेता ने उसे शुक हो जाने का शाप दे दिया। मित्र के वियोग के दुःख से चन्द्रापीड भी मर जाता है। तभी कादम्बरी वहाँ आ जाती है। वह भी मरण हेतु प्रवृत्त होती है। तभी आकाशवाणी होती है जो महाश्वेता और कादम्बरी दोनों को आश्वस्त करती है कि तुम दोनों का मिलन अपने प्रियतम से अवश्य होगा। इसी के साथ छोटे-छोटे प्रसंगों से कथा समाप्त होती है।

1.6.4 हर्षचरित

आठ उच्छ्वासों में उपलब्ध हर्षचरित एक आख्यायिका है। प्रारम्भ के इक्कीस श्लोकों में भगवान् शिव और पार्वती का वन्दन किया गया है। तदनन्तर संस्कृत साहित्य के प्रमुख कवियों तथा ग्रन्थों की भी स्तुति की गई है। प्रथम उच्छ्वास में बाण का स्वयं का वर्णन, मित्रवर्णनादि विषय संवलित हैं। कुबेर के प्रपौत्र चित्रभानु के रूप में बाण का ही जन्म बताया गया है। अजिरवती नदी के तट पर हर्ष से बाण मिलते हैं। तीन उच्छ्वासों के पश्चात् बाण हर्षचरित सुनाना प्रारम्भ करते हैं।

राजा प्रभाकरवर्धन और रानी यशोमती के दो पुत्र (राज्यवर्धन और हर्षवर्धन) तथा एक पुत्री (राज्यश्री) हुए। हर्षवर्धन एवं राज्यवर्धन हूणों के नाश हेतु प्रस्थान करते हैं। पिता के अस्वास्थ्य का समाचार जानकर हर्षवर्धन मार्ग से ही लौट आते हैं। राजा प्रभाकरवर्धन की मृत्यु हो जाती है। मृत्यु से पूर्व रानी यशोमती अग्नि में प्रविष्ट हो जल जाती हैं। राज्यवर्धन विजय प्राप्त कर लौटते हैं और राज्य का भार हर्षवर्धन को सौंप देते हैं। इसी समय राज्यश्री के मालवराज द्वारा बन्दी बना लिए जाने तथा उसके पति ग्रहवर्मा के मारे जाने का समाचार प्राप्त होने पर राज्यवर्धन मालवराज को मारने जाते हैं। मावलराज को तो वे मार देते हैं किन्तु गौडनरेश द्वारा छलपूर्वक मार दिये जाते हैं। इससे क्रोधित होकर हर्षवर्धन पृथ्वी को गौडविहीन करने की प्रतिज्ञा लेते हैं।

राज्यश्री के सपरिवार अग्निदाह का समाचार बौद्धसंन्यासी दिवाकर मिश्र (जो ग्रहवर्मा का मित्र था) हर्षवर्धन को बताता है। हर्षवर्धन उसे बचा लेते हैं। हर्ष अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने हेतु प्रस्थान करते हैं। संन्यासी से कहते हैं कि मैं लौटकर आऊँ तब तक राज्यश्री का ध्यान रखना फिर मैं भी काषाय वस्त्र धारण कर लूँगा। इस प्रकार हर्षचरित सन्ध्यावर्णन के साथ समाप्त होता है।

1.6.5 शिवराजविजय

प्राचीनता और आधुनिकता दोनों का समावेश लिये अम्बिकादत्त व्यास आधुनिक साहित्यकारों में अग्रगण्य हैं। आपकी पचहत्तर से भी अधिक रचनाएं हैं। शिवराजविजय का कथानक दो धाराओं को सतत चला रहा है। एक ओर महाराष्ट्र के अधीश्वर वीर शिवाजी हैं और दूसरी ओर नायक रघुवीर सिंह। ये दोनों धाराएं एक दूसरे की पूरक बनकर कदाचित् अन्योन्याश्रित होकर साथ-साथ चलती हैं। इस कथानक को तीन विरामों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक विराम चार निःश्वासों में विभक्त है। पांचाली रीति में निबद्ध शिवराजविजय में अम्बिकादत्त व्यास ने कहीं समास बहुला पदावली का प्रयोग किया है तो कहीं सरल और लघु पदावली से भी काव्य में चमत्कार पैदा कर दिया है। यथा –

''बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चासीत्।''

अफजल खाँ द्वारा शिवाजी के शौर्य का अद्भुत वर्णन शिष्ट, मर्यादित एवं सात्त्विक रूप से किया गया है। शिवराजविजय देश प्रेम, जाति प्रेम, धर्म प्रेम का उत्तम आदर्श प्रस्तुत करता है।

1.6.6 अन्य गद्यकाव्य

सुबन्धु, बाण और दण्डी जैसे शीर्षस्थ गद्यकाव्यकारों की शैली तथा रचनाओं के विषय में पढ़ने के बाद इस इकाई में हम कुछ अन्य लोकप्रिय गद्यकारों की गद्य रचनाओं के विषय में सामान्य रूप से पढ़ेंगे। यथा – विश्वेश्वर पाण्डेय, वादीभसिंह, धनपाल, मेरुतुङ्गाचार्य, राजशेखर सूरी, वामनभट्ट बाण, पण्डिता क्षमाराव।

1) **विश्वेश्वर पाण्डेय की मन्दारमंजरी** – विश्वेश्वर पाण्डेय के पिता श्री लक्ष्मीधर पाण्डेय उत्तर प्रदेश के अल्मोड़ा जिले के निवासी थे। विश्वेश्वर पाण्डेय चालीस वर्ष की अल्पायु में ही देवलोक को चले गए थे। आपकी उत्कृष्ट गद्यरचना 'मन्दारमंजरी' अत्यन्त पाण्डित्यपूर्ण कृति है। इसमें बाणभट्ट की कादम्बरी की तरह पूर्वभाग और उत्तरभाग है। कहा जाता है कि पूर्वभाग विश्वेश्वर पाण्डेय की स्वयं की रचना है तथा उत्तरभाग इनके शिष्यों ने पूर्ण किया था।

   राजा राजशेखर एवं रानी मलयवती के पुत्र चित्रभानु तथा विद्याधर चन्द्रकेतु एवं चन्द्रलेखा की पुत्री मन्दारमंजरी के प्रेम तथा विवाह की कथा का वर्णन मन्दारमंजरी का वर्ण्य-विषय है।

2) **वादीभसिंह की गद्यचिन्तामणि** – गद्यचिन्तामणि के रचयिता वादीभसिंह तमिल निवासी थे। महाराज जीवन्धर के जीवन पर आधारित गद्यचिन्तामणि ग्यारह लम्भकों में रचित है। आलंकारिक रचना गद्यचिन्तामणि एक आख्यायिका है जिसका उपजीव्य गुणभद्रकृत उत्तरपुराण है। इसके अतिरिक्त स्याद्वादसिद्धि तथा नवपदार्थनिश्चय आदि भी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

3) **धनपाल की तिलकमंजरी** – उज्जयिनी निवासी सर्वदेव के पुत्र धनपाल राजा मुंजराज के सभाकवि थे। आपकी रचना तिलकमंजरी उच्चकोटि का गद्यकाव्य है। कादम्बरी की शैली में वर्णित तिलकमंजरी और समरकेतु की प्रणयकथा इसका वर्ण्यविषय है। तथापि कादम्बरी की तरह दुरूह गुम्फन तथा श्लेष प्रदर्शन इसमें नहीं है। धनपाल की शैली सुगम होने से परवर्ती गद्यकार इसे बाण, दण्डी और सुबन्धु से भी श्रेष्ठ गद्यकार मानते हैं।

4) **मेरुतुङ्गाचार्य की प्रबन्धचिन्तामणि** – चन्द्रप्रभ मुनि के शिष्य मेरुतुङ्गाचार्य की रचना प्रबन्धचिन्तामणि एक ऐतिहासिक रचना है। प्रबन्धचिन्तामणि ग्यारह प्रबन्धों में निबद्ध है। प्रबन्धचिन्तामणि में प्रसिद्ध ऐतिहासिक महान् हस्तियों यथा विद्वानों, कवियों और आचार्यों के जीवन से सम्बद्ध घटनाओं का वर्णन है।

5) **राजशेखर सूरि की प्रबन्धकोश**– राजशेखर सूरि चौदहवीं शताब्दी के गद्यकार हैं। अपनी रचना प्रबन्धकोश जिसे चतुर्विंशतिप्रबन्ध भी कहा जाता है, के कारण आप गद्यकारों की श्रेणी में अग्रगण्य हैं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि चतुर्विंशतिप्रबन्ध में चौबीस महापुरुषों का जीवन वर्णित किया गया है।

6) **वामनभट्टबाण की वेमभूपालचरितम्** – तेलंगाना के वामनभट्टबाण वत्सगोत्र में उत्पन्न हुए। वेमभूपाल की राज्यसभा में रहते हुए इन्होंने 'वेमभूपालचरितम्' नामक आख्यायिका लिखी। इसमें वेमभूपाल का यशोगान ही वर्ण्य-विषय है। इन्होंने नलाभ्युदयकाव्य, रघुनाथचरितम् महाकाव्य, पार्वतीपरिणय नाटक तथा शब्दचन्द्रिका तथा शब्दरत्नाकर (कोशग्रन्थ) भी लिखे।

क्षमाराव का गद्यसाहित्य – श्रीशंकर पाण्डुरंग की पुत्री पण्डिता क्षमाराव आधुनिक गद्यकारों की श्रेणी में अत्यन्त प्रतिष्ठित नाम है। क्षमाराव गद्य तथा पद्य दोनों ही विधाओं की उत्कृष्ट रचनाकार हैं। महात्मा गाँधी पर इन्होंने बहुत साहित्य लिखा, यथा – सत्याग्रहगीता, उत्तरसत्याग्रहगीता, गाँधीचरित (तीन खण्ड)। इसके अतिरिक्त क्षमाराव ने सात एकांकी, चार नाटक, चार पद्यबद्ध जीवनचरित, 35 लघुकथाएं तथा कथामुक्तावली के साथ अनेक निबन्धग्रन्थों की भी रचना की।

बाणभट्ट की तरह गुम्फित शैली में लिखी गयी कथामुक्तावली इनके उच्च शास्त्रज्ञान और रचनाकौशल का उत्कृष्ट उदाहरण है। आपका गद्य सरस, प्रवाहपूर्ण और अलंकृत शैली में निबद्ध है।

अन्य आधुनिक गद्यकार – संस्कृत गद्य साहित्य में सतत रचनाकर्म चल रहा है। जितनी साहित्यिक सर्जना संस्कृत भाषा में निरन्तर की जा रही है उतनी विश्व की अन्य किसी भी भाषा में नहीं की जा रही है। कुछ आधुनिक गद्यसाहित्यकार जिन्होंने लघुकथाओं, उपन्यासों, निबन्धों तथा यात्राओं का वर्णन किया है उनके नाम निम्नानुसार हैं – श्रीनारायणशास्त्री खिस्ते, श्रीनवलकिशोर शास्त्री कांकर, रामशरण त्रिपाठी, श्रीपाद शास्त्री, मथुरादत्त दीक्षित, रामावतार शर्मा, चारुदेव शास्त्री, राधावल्लभ त्रिपाठी, अभिराज राजेन्द्र मिश्र।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

i) कथा एवं आख्यायिका हैं –

क) गद्यकाव्य   ख) आख्यान

ग) चम्पूकाव्य   घ) पद्यकाव्य

ii) गद्यचिन्तामणि के रचयिता हैं –

क) बाणभट्ट　　ख) विश्वेश्वर पाण्डेय

ग) अश्वघोष　　घ) वादीभसिंह

iii) बाणभट्ट की कृति है –

क) कादम्बरी　　ख) वासवदत्ता

ग) मन्दारमंजरी　　घ) मेघदूतम्

iv) दशकुमारचरित के रचयिता हैं–

क) बाणभट्ट　　ख) दण्डी

ग) सुबन्धु　　घ) क्षेमेन्द्र

v) सुबन्धु की रचना है–

क) प्रबन्धकोश　　ख) प्रबन्धचिन्तामणि

ग) वासवदत्ता　　घ) शिवराजविजय

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) साहित्यदर्पणकार के अनुसार गद्यकाव्य के चार भेदों के नाम बताइए।

....

....

....

....

....

ii) तीन आधुनिक गद्यकाव्यकारों के नाम बताइए।

....

....

....

....

....

अभ्यास प्रश्न

1) कादम्बरी के तीनों जन्मों के पात्रों का नामोल्लेख कीजिए।

2) गद्यकाव्यकारों में से किन्हीं दो की रचनाओं का परिचय दीजिए।

3) हर्षचरितम् की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

1.7 सारांश

भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है भाषा और भाषा का सरलतम रूप है गद्य। यही गद्य जब काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों पर आधारित हो जाता है तब गद्यकाव्य कहलाता है। गद्य का प्रादुर्भाव तो वैदिक काल से ही हो चुका था। वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण, आरण्यक,

उपनिषदादि ग्रन्थों में पर्याप्त ज्ञान राशि गद्य विधा में निबद्ध है। पौराणिक, शास्त्रीय तथा साहित्यिक गद्य का भी अध्ययन हमने इस इकाई में किया। प्राचीन गद्य-साहित्य की पृष्ठभूमि में प्रणय-वर्णन और आश्रयदाता राजा के गुण-यशोगान का वर्णन प्राधान्येन रहता है। किन्तु आधुनिक गद्यकाव्य साहित्य का कवि सामाजिक-राजनैतिक दशा का वर्णन, स्वतन्त्रता संग्राम का चित्रण, नारी की दशा का निरूपण, यात्रावृत्त आदि का वर्णन बहुतायत से करता है। प्राचीन से अर्वाचीन तक की गद्यकाव्य की विकास यात्रा का संक्षेप में वर्णन हम पढ़ चुके हैं।

गद्यकाव्य के मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय तथा चूर्णक चार भेद बताए गए हैं। कथा और आख्यायिका भी गद्य के अन्य प्रभेद हैं। इस इकाई में हमने वासवदत्ता, दशकुमारचरित, कादम्बरी, हर्षचरित और शिवराजविजय जैसे प्रमुख गद्यकाव्यों के वर्ण्य विषय को जाना। अन्य प्रमुख गद्यकारों की कृतियों यथा मन्दारमंजरी, गद्यचिन्तामणि, तिलकमंजरी, प्रबन्धचिन्तामणि, प्रबन्धकोश, वेमभूपालचरितम् आदि रचनाओं तथा इनके रचनाकारों का संक्षेप में अध्ययन किया।

1.8 शब्दावली

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ – काव्य रचना के सिद्धान्त सम्बन्धी ग्रन्थ

वृत्त – छन्द

चूर्णक – गद्यकाव्य का एक भेद

वृत्तगन्धि – यत्र-तत्र छन्द का समाविष्ट होना (यह भी गद्यकाव्य का एक भेद है।)

आर्या – छन्द का भेद (नाम)

वक्त्र-अपरवक्त्र – छन्द का नाम

निबन्धन – रचना

सिंहावलोकन – स्थूल रूप से देखेंगे

प्रणयकथा – प्रेमकथा

दुर्दैवात् – दुर्भाग्य के कारण

दैवात् – भाग्यवश

उच्छ्वास – आख्यायिका के अंक विभाजन का नाम

कषाय धारण करना – संन्यासी बनना

अग्रगण्य – शीर्षस्थ लोगों में गिना जाना

पांचाली – गद्य लेखन की एक रीति

उपजीव्य – जहाँ से विषय लिया गया है

सर्जना – रचना

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, पंचम खण्ड, गद्य, आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2003

2) संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', जयकृष्णदास—कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी, 2016

3) संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001

1.10 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (i) (क) वेद (ii) (ख) निकषं (iii) (क) गद् (iv) (ख) यजुर्वेद

2) (i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

बोध प्रश्न 2

1) (i) (क) गद्यकाव्य (ii) (घ) वादीभ सिंह (iii) (क) कादम्बरी (iv) (ख) दण्डी (v) (ग) वासवदत्ता

2) (i) साहित्यदर्पणकार के अनुसार गद्यकाव्य के चार भेदों के नाम इस प्रकार हैं —मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय, चूर्णक।

(ii) तीन आधुनिक गद्यकाव्यकारों के नाम इस प्रकार हैं – श्रीनारायणशास्त्री खिस्ते, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 2 प्रमुख गद्यकार भाग-1 सुबन्धु, बाण तथा दण्डी

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- गद्य-विधा के प्रमुख ग्रन्थों का सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे।
- प्रमुख गद्यकार सुबन्धु, बाण तथा दण्डी के जीवन-वृत्त तथा उनकी कृतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- प्रमुख गद्यकार सुबन्धु, बाण तथा दण्डी के शैलीगत वैशिष्ट्य से परिचित होंगे।
- संस्कृत में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली एवं प्रमुख शब्दों एवं उनके अर्थों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- गद्य में संस्कृत के अनेक ग्रन्थ हैं जो वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं जिसका अध्ययन कर हमें लाभ अवश्य लेना चाहिए आपको इसकी भी प्रेरणा प्राप्त होगी।

2.1 प्रस्तावना

मानव की स्वाभाविक भाषा का रूप गद्यात्मक होता है। दण्डी ने काव्यादर्श में गद्य की परिभाषा दी है और उसके कथा तथा आख्यायिका दो भेद स्वीकार किए हैं। गद्य लेखन करना स्वयं में एक कठिन कार्य है, इसलिए आठवीं शताब्दी में यह उक्ति प्रचलित हुई कि गद्यकाव्य लिखना कवियों की कसौटी है– **'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।'**

प्रिय छात्रों! इस खण्ड की प्रथम इकाई में आपने गद्य-साहित्य के उद्भव और विकास के विषय में अध्ययन किया। इस इकाई के माध्यम से आप संस्कृत साहित्य के प्रमुख गद्यकारों सुबन्धु, बाण तथा दण्डी के व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे। संस्कृत साहित्य में बाण, सुबन्धु तथा दण्डी ने अपनी रचनाओं द्वारा गद्य-साहित्य को समृद्ध बनाया है। बाण विरचित कादम्बरी, सुबन्धु विरचित वासवदत्ता एवं दण्डी विरचित दशकुमारचरित गद्यरत्नत्रयी के अन्तर्गत परिगणित हैं। यहाँ आप इन्हीं गद्यकाव्यकारों का परिचय प्राप्त करेंगे।

2.2 सुबन्धु

संस्कृत गद्य-साहित्य में सुबन्धु का विशिष्ट स्थान है।उनकी एकमात्र उपलब्ध कृति वासवदत्ता है। प्रिय विद्यार्थियों! इकाई के इस खण्ड के द्वारा आप सुबन्धु के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य से परिचित होंगे।

2.2.1 जीवन-वृत्त

गद्यरत्नत्रयी (सुबन्धु, बाण और दण्डी) में सुबन्धु का समय, स्थान और वंश आदि का यथार्थ परिचय प्राप्त नहीं होता है। सुबन्धु के माता-पिता के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी अज्ञात है। गद्यकाव्य के लेखकों में सुबन्धु ही सर्वप्रथम लेखक हैं जिनका ग्रन्थ वासवदत्ता अलंकृत शैली में निबद्ध गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। सुबन्धु वेद, व्याकरण, पुराण, दर्शन, धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत, काव्यशास्त्र, कामशास्त्र, नीतिशास्त्र और संगीत आदि में निपुण थे।

श्लेषप्रधान शैली के कारण कुछ इन्हें कश्मीरी मानते हैं तो कुछ मध्यदेशीय स्वीकार करते हैं। बाणभट्ट के द्वारा प्रशंसित किये जाने के कारण ये बाण के पूर्ववर्ती सिद्ध होते हैं। इन्होंने एक श्लेष के द्वारा न्यायवार्तिक के रचयिता प्रसिद्ध नैयायिक उद्योतकर का स्पष्ट संकेत किया है–**न्यायस्थितिमिवोद्योतकरस्वरूपाम् ।** उद्योतकर का समय छठीं शताब्दी का अन्त तथा सप्तम शताब्दी का आदि माना जाता है। इससे सुबन्धु का समय उद्योतकर के अनन्तर होना चाहिए।

हर्षवर्धन (606–48) के सभापण्डित होने से बाणभट्ट का समय (630–640 ई0) तक मानना उचित प्रतीत होता है। बाण से पूर्ववर्ती होने के कारण सुबन्धु का समय 600 ई0 के आस-पास मानना उचित है।

सुबन्धु बाण के लिए प्रेरक और आदर्श थे इसलिए हर्षचरितम् में उनकी कृति की प्रशंसा करके कादम्बरी में उससे आगे निकल जाने की बात बाण ने की है। सुबन्धु की समन्वयवादी एवं धार्मिक भक्त के रूप में प्रतिष्ठा है।

2.2.2 कर्तृत्व

सुबन्धु का एक ही ग्रन्थ है जो वासवदत्ता के नाम से प्रसिद्ध है। 'वासवदत्ता' का कथानक पूर्णतः कल्पित है, इसका कोई विभाजन नहीं है अतः इसे कथा की श्रेणी में रखा जाता है।

इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु तथा राजकुमारी वासवदत्ता के प्रेम और विवाह का रोचक वृत्तान्त वर्णित है। नायक-नायिका एक दूसरे को स्वप्न में देखते हैं और परस्पर अनुरक्त हो जाते हैं। राजा चिन्तामणि का पुत्र राजकुमार कन्दर्पकेतु स्वप्न में एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी को देखता है और अपने मित्र मकरन्द के साथ उसकी खोज में निकल पड़ता

है। विन्ध्य की तलहटी में भ्रमण करते हुए एक वृक्ष के नीचे आराम करते हुए रात्रि में शुक-सारिका की वार्ता में राजकुमार और मित्र मकरन्द ने सुना कि पाटलिपुत्र की राजकुमारी ने राजकुमार कन्दर्पकेतु को स्वप्न में देखा है जिसकी खोज के लिए उसकी सारिका तमालिका निकली हुई है। इस तरह शुक-सारिका के सहयोग से नायक और नायिका का मिलन होता है। किन्तु वासवदत्ता का पिता शृंगारशेखर उसका विवाह विद्याधरों के राजा पुष्पकेतु से करना चाहते हैं वे दोनों एक जादुई घोड़े से भाग जाते हैं और विन्ध्य पर्वत पर पहुँचते हैं। विन्ध्याटवी में पहुँचकर वासवदत्ता सोते हुए कन्दर्पकेतु को छोड़कर समीप ही घूमने के लिए निकल जाती है जहाँ उसके सौन्दर्य पर मोहित होकर उसे पाने के लिए किरातों के दो समूहों में परस्पर युद्ध होता है। युद्ध के समय किसी तरह छिपकर वासवदत्ता समीप के किसी ऋषि के आश्रम में चुपके से चली जाती है और अनुचित प्रवेश के कारण पाषाणशिला बन जाती है। उधर कन्दर्पकेतु जब अपनी नींद से जागता है तो वासवदत्ता को न पाकर आत्महत्या करने के लिए उद्यत होता है किन्तु तभी आकाशवाणी होती है कि तुम दोनों का पुनः मिलन होगा इसलिए वह आत्महत्या नहीं करता है। कुछ समय पश्चात् राजकुमार कन्दर्पकेतु के स्पर्श से पत्थर की शिलारूपी वासवदत्ता पुनः वासवदत्ता बन जाती है तथा दोनों का मिलन हो जाता है। अन्त में कन्दर्पकेतु वासवदत्ता के साथ स्वराजधानी चला जाता है और शेष जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करता है। इसी के साथ कथा का अन्त हो जाता है।

2.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

संस्कृत-गद्यकारों की बृहत्त्रयी में सुबन्धु का अद्वितीय स्थान है। उनकी रचना 'वासवदत्ता' में प्रौढ़ता परिलक्षित होती है। विद्वानों के लिए यह परीक्षा का ग्रन्थ है।

ओज, समास बहुलता, कठिन पद-विन्यास, पाण्डित्य-प्रदर्शन और श्रमसाध्यता, काव्यगौरव और प्रखर पाण्डित्य के लिए विख्यात सुबन्धु ने अपने कृतित्व में जिस शैली को अपनाया है वह श्लेषमयी गौडी रीति है जिसको कवि ने स्वयं ही स्वीकार करते हुए कहा है –

सरस्वतीदत्तवरप्रसादश्चक्रे सुबन्धुः सुजनैकबन्धुः।
प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबन्धम्।। वास.13।

अर्थात् जिसके ऊपर सरस्वती देवी ने वरदान देकर अपना अनुग्रह प्रकट किया है, जो सुबन्धु एकमात्र सज्जनों के सुबन्धु हैं तथा जो प्रत्येक अक्षरों के श्लेषालङ्कार बहुल प्रबन्ध के विन्यास में विदग्धता के निधि हैं, उन्होंने ही वासवदत्ता की रचना की है। शैलीगत वैशिष्ट्य के आधार पर '**गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति**' की कसौटी पर सुबन्धु की वासवदत्ता पूर्णतया खरी उतरती है।

सुबन्धु की वासवदत्ता में प्रकृति-वर्णन, स्त्री-सौन्दर्य, नगरीवर्णन, विस्तृत संवाद आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। जिसके कारण कवि का कला-पक्ष अत्यधिक विकसित और उजागर हो सका है, परन्तु उनका भाव-पक्ष कहीं दबा सा प्रतीत होता है। रस परिपाक और कथा-प्रवाह में भी न्यूनता दृष्टिगोचर होती है। अलंकारप्रियता, पौराणिक-कथा, विदग्धता और समास रसिकता का अधिक प्रदर्शन किया गया है। श्लेष, विरोधाभास और परिसंख्या आदि अलंकारों की बहुलता है। इनकी बहुलता कवि को रससिद्ध कवित्व की श्रेणी से दूर कर देती है। यही कारण है कि आनन्दवर्धनाचार्य की यह उक्ति सुबन्धु पर पूर्णतया घटती है कि कुछ कवि केवल अलंकार प्रयोग में ही अपनी योग्यता का प्रदर्शन करते हैं और रस परिपाक की सर्वथा उपेक्षा करते हैं। वे उत्तम काव्य में मुख्यतया श्लेषप्रयोग और वक्रोक्ति का समन्वय आवश्यक मानते हैं।

सुबन्धु ने पद-पद पर श्लेष-प्रयोग के महत्त्व पर गर्व करते हुए कहा है –

प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्धनिधिर्निबन्धम्।। (वासवदत्ता भूमिका श्लोक 13)

सुबन्धु को उनकी शैली के कारण विद्वानों में बहुत सम्मान प्राप्त हुआ। सुबन्धु का श्लेष-प्रयोग अद्भुत एवं विलक्षण है। विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा आदि का प्रयोग कवि की नूतन दृष्टि एवं सूक्ष्म चिन्तन को परिलक्षित करता है। इनकी रचना में संगीतात्मकता, लयात्मकता है। क्लिष्टपदावली और कोमल-कान्त पदावली का मिश्रण किया गया है। एक तरफ उलझाने वाले श्लेष प्रयोग हैं तो दूसरी ओर स्वभावोक्ति, उत्प्रेक्षा सहजता प्रदान करने वाले अलंकार भी हैं। कवि की भाषा पर सिद्धता है। कठिन के बाद सरल और सरल के बाद कठिन पदावली का प्रयोग काव्य को समता प्रदान करता है। ओज, प्रसाद और माधुर्य गुणों से युक्त यह काव्य अनुपम है। पाण्डित्य प्रदर्शन और सरस पदावली दोनों विरोधी गुणों का समन्वय होने के कारण वासवदत्ता में मणि-कांचन संयोग दृष्टिगोचर होता है।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही(√) का चिह्न लगाइए –

i) वासवदत्ता गद्यकाव्य के लेखक सुबन्धु हैं – ( )

ii) वासवदत्ता का कथानक ऐतिहासिक है – ( )

iii) सुबन्धु पांचाली शैली के कवि हैं – ( )

iv) वासवदत्ता नामक गद्यकाव्य के नायक कन्दर्पकेतु हैं – ( )

2) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

i) सुबन्धु की रचना है –

क) वासवदत्ता ख) कादम्बरी

ग) हर्षचरितम् घ) इनमें से कोई नहीं

ii) वासवदत्ता में नायक/नायिका हैं –

क) उदयन/ वासवदत्ता ख) कन्दर्पकेतु/ वासवदत्ता

ग) उदयन/मालती घ) दुष्यन्त/वासवदत्ता

iii) सुबन्धु का प्रिय अलंकार है –

क) श्लेष ख) अनुप्रास

ग) यमक घ) उपमा

3) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

i) प्रत्यक्षर .... मय प्रबन्धविन्यासवैदग्धनिधिर्निबन्धम्।

(श्लेष/उपमा)

ii) सुबन्धु की रीति .... है ।

(वैदर्भी/गौडी)

iii) राजकुमारी वासवदत्ता की सारिका का नाम .... था ।

(तमालिका/मालिका)

iv) राजकुमार कन्दर्पकेतु के मित्र का नाम .... था।

(आनन्द / मकरन्द)

अभ्यास प्रश्न

1) सुबन्धु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।

2) सुबन्धु के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

2.3 बाणभट्ट

प्रिय विद्यार्थियों! अभी तक आपने सुबन्धु के व्यक्तित्व, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन किया। अब आप बाण के व्यक्तित्व, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

2.3.1 जीवन-वृत्त

काव्य और नाटक के क्षेत्र में जो स्थान तथा कीर्ति कालिदास को प्राप्त है वही गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट को प्राप्त है। बाण ने स्वयं हर्षचरित के आरम्भिक उच्छ्वासों में एवं कादम्बरी के मंगल पद्यों में अपना परिचय दिया है। उन्होंने अपने पूर्वजों का निवास स्थान प्रीतिकूट नामक नगर को बताया है। यह प्रीतिकूट नामक स्थान वर्तमान में बिहार का पश्चिमी भाग जो आज 'पीरू' गाँव के रूप में च्यवनाश्रम देवकुण्ड के निकट (बिहार जिले में औरंगाबाद) है। बाण के पूर्वज वात्स्यायन वंश के थे जिसमें कुबेर नामक व्यक्ति का जन्म हुआ। कुबेर के अच्युत, ईशान, हर, पाशुपत नामक चार पुत्र हुए। पाशुपत के पुत्र अर्थपति हुए। अर्थपति के पुत्रों में (भृगु, हंस, शुचि, कवि, महीदत्त, धर्म, जातवेदस्, चित्रभानु, त्र्यक्ष, अहिदत्त, विश्वरूप) आठवें पुत्र चित्रभानु थे जो बाण के पिता थे। बाण के पुत्र भूषण (उपनाम पुलिन्द) हुए जिन्होंने बाण की अपूर्ण गद्यकृति कादम्बरी को पूर्ण किया।

बाण का समय संस्कृत साहित्य के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण समय था। उस समय विद्वानों तथा कवियों की अच्छी संख्या थी। सूर्यशतक के रचयिता मयूर का भी आविर्भाव इसी समय हुआ था। बाण और मयूर दोनों हर्ष के आश्रयदाता कवि थे। हर्षवर्धन (606 से 648 ई.) के सभा पण्डित होने के कारण बाणभट्ट का समय सातवीं शताब्दी ई0 पूर्वार्द्ध माना जाता है।

बाल्यावस्था में ही इनकी माता राजदेवी का स्वर्गवास हो गया था। चौदह वर्ष की अवस्था में इनके पिता का भी देहान्त हो गया। पिता की मृत्यु के बाद शोकसन्तप्त बाण कुछ समय पश्चात् देशाटन के लिए निकल पड़े। अपने साथियों के साथ घुमक्कड़ी जीवन व्यतीत करने लगे जिससे उनका उपहास होने लगा, परन्तु बाण ने इसकी परवाह नहीं की। राजा हर्ष ने इन्हें '**महानयं भुजंग**' कहा। बाण ने उसका समाधान किया कि मेरा बचपन बाल्योचित धृष्टताओं से युक्त था। अब विवाह हो जाने के कारण मैं एक स्वच्छ आचरण वाला गृहस्थ हो गया हूँ।

2.3.2 कर्तृत्व

बाणभट्ट के ग्रन्थों में उनके द्वारा रचित दो ग्रन्थों को प्रमुख माना जाता है – 1. हर्षचरित (आख्यायिका), 2.कादम्बरी (कथा)। चण्डीशतक (दुर्गा की स्तुति का काव्य), मुकुटताडितकम् नाटक को भी कुछ विद्वान् इनकी कृति मानते हैं।

1) **हर्षचरित** – हर्षचरित अपनी महत्ता के कारण विद्वानों में बहुत समादृत है। ऐतिहासिक कथानक पर आश्रित गद्यकाव्यों में यह प्राचीनतम उपलब्ध आख्यायिका है, बाण ने

प्रारम्भ में ही कहा है– **करोम्याख्यायिकाम्भौद्यौ जिह्वाप्लवनचापलम्।** यह बाण की प्रथम रचना है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं। प्रथम दो उच्छ्वासों में बाण ने अपने वंश का परिचय दिया है और अग्रिम 6 उच्छ्वासों में हर्ष के पूर्वजों का वर्णन किया है। इसमें हर्ष के जन्म से लेकर राज्यश्री से मिलने तक का विवरण है। बाण ने हर्षचरित के आरम्भ के 21 श्लोकों में मंगलाचरण तथा पूर्व कवियों एवं कृतियों की प्रशंसा करके महाराज हर्षवर्धन का जयकार किया है।

2) **कादम्बरी** – यह बाण की दूसरी कृति है जो अत्यधिक लोकप्रिय है। यह काल्पनिक कथा है। दुर्भाग्यवश अपनी इस कृति को बाण स्वयं पूर्ण नहीं कर सके। उनके पुत्र भूषणभट्ट (या पुलिनभट्ट) ने इसे पूरा किया। पुत्र ने पिता की शैली अपनाकर अधूरी कथा का सुन्दर उपसंहार किया। इसका कथानक बृहत्कथा पर आश्रित है जो कथासरित्सागर (59/22-178) तथा बृहत्कथामंजरी (16/183....)में निर्दिष्ट है।

कादम्बरी में चन्द्रापीड और वैशम्पायन के तीन जन्मों का वर्णन है। कथा के अन्त में प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं से मिल जाते हैं। इनके तीन जन्मों का विवरण इस प्रकार है –

	चन्द्रापीड	**वैशम्पायन**	**पत्रलेखा**	**इन्द्रायुध**	**चाण्डालकन्या**
प्रथमजन्म	चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिंजल	लक्ष्मी
द्वितीयजन्म	चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	....
तृतीयजन्म	शूद्रक	शुक	....	कपिंजल	चाण्डालकन्या

मूलकथा (आमुख) – विदिशा के राजा शूद्रक के दरबार में आकर एक चाण्डालकन्या एक अत्यन्त मेधावी, शास्त्रज्ञ और मनुष्य की वाणी बोलने वाला शुक राजा को समर्पित करती है। शुक आर्या छन्द में राजा की स्तुति करता है जिसे सुनकर राजा आश्चर्यचकित हो जाते हैं और उसके जन्मादि के बारे में पूछते हैं। शुक अपने जन्म के तुरन्त बाद विन्ध्याटवी में माता की मृत्यु, पिता के द्वारा लालन-पालन, शिकारियों द्वारा पिता का वध एवं जाबालि ऋषि के शिष्य हारीत के द्वारा जाबालि ऋषि के आश्रम में अपने आगमन का वर्णन करता है। इसके बाद जाबालि ऋषि ने शुक के पूर्वजन्म का वर्णन इस प्रकार किया।

पूर्वार्द्ध की कथा – उज्जयिनी के राजा तारापीड और रानी विलासवती को तपस्या से चन्द्रापीड नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा के सुयोग्य मन्त्री शुकनास की पत्नी मनोरमा को भी इसी समय पुत्र हुआ जिसका नाम वैशम्पायन हुआ। दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी। दोनों समस्त विद्याओं में निपुण हो गए। युवराज पद पर अभिषेक के समय मन्त्री शुकनास ने चन्द्रापीड को अत्यन्त सारगर्भित उपदेश दिया। चन्द्रापीड को इन्द्रायुध नामक घोड़ा और पत्रलेखा नामक दासी भी मिली। चन्द्रापीड और वैशम्पायन दिग्विजय के लिए निकल पड़े। किन्नरयुगल का पीछा करते हुए इन्द्रायुध पर सवार चन्द्रापीड अच्छोद सरोवर पर पहुँचा। वहाँ एक युवती तपस्विनी महाश्वेता से उसका परिचय हुआ। महाश्वेता ने वर्णन करते हुए बताया कि पुण्डरीक नामक एक ऋषिकुमार से उसका प्रेम हो गया था, परन्तु मिलने से पूर्व ही पुण्डरीक कामपीड़ा से दिवंगत हो गया। तभी से वह इस सरोवर में तपस्विनी का जीवन व्यतीत कर रही थी। महाश्वेता अपनी सखी गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी से मिलाने के लिए चन्द्रापीड को ले जाती है। कादम्बरी ने भी महाश्वेता के विवाह न करने के कारण कौमार्यव्रत धारण किया था। प्रथम मिलन में ही चन्द्रापीड और कादम्बरी परस्पर अनुरक्त हो जाते हैं। इसी समय पिता के बुलाने पर चन्द्रापीड उज्जयिनी लौटता है और सेना सहित वैशम्पायन को बाद में आने के लिए छोड़ देता है।

उत्तरार्द्ध की कथा – बहुत समय तक वैशम्पायन के न लौटने पर चिन्तित चन्द्रापीड उसकी खोज में अच्छोद सरोवर पहुँचता है। वहाँ महाश्वेता ने बताया कि वैशम्पायन मुझ पर आसक्त हो गया था। अतः मैंने उसे शुक होने का शाप दे दिया। अपने मित्र के वियोग से दुःखी चन्द्रापीड के भी प्राण निकल गए। तभी कादम्बरी वहाँ आती है और प्रिय के वियोग में प्राण देना चाहती है। तभी आकाशवाणी उसे रोकती है और आश्वासन देती है कि इस शरीर को जलाना मत इसमें पुनः प्राण आएगा और शीघ्र ही तुम दोनों सखियों का अपने प्रेमी से पुनर्मिलन होगा। (यहाँ जाबालि द्वारा वर्णित कथा समाप्त होती है।)

ऋषि जाबालि से अपने पूर्वजन्म का विवरण सुनते ही शुक में दिव्यवाणी और ज्ञान जागृत हो गया और महाश्वेता की स्मृति सताने लगी। तोते ने राजा शूद्रक से कहा कि मैं महाश्वेता से मिलने के लिए अधीर होकर उड़ा तभी चाण्डालकन्या ने उसे पकड़ लिया और उसके पास ले आई। चाण्डालकन्या ने राजा को बताया कि मैं पुण्डरीक (इस जन्म में वैशम्पायन) की माता हूँ। आप भी पूर्वजन्म में चन्द्रापीड थे। यह सुनते ही राजा शूद्रक को कादम्बरी की याद सताने लगी और वे प्राणहीन हो गए। उधर चन्द्रापीड जीवित हो गए। तोते की कथा समाप्त होने पर शाप का समय समाप्त हो गया था। तोता भी पुण्डरीक हो गया। इस प्रकार चन्द्रापीड-कादम्बरी और पुण्डरीक-महाश्वेता का पुनर्मिलन हो गया और सभी सानन्द रहने लगे।

2.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

बाणभट्ट गद्यकाव्य के मूर्धाभिषिक्त सम्राट हैं। इनकी शैली गद्यकवियों के लिए आदर्श है। इन्होंने गद्य के समस्त गुणों को आत्मसात् करके पांचाली शैली में प्रकट किया है। ये पांचाली शैली के प्रयोग में इतने निपुण हैं कि सभी पाठक इनके प्रति नतमस्तक हो जाते हैं। कलापक्ष, भावपक्ष एवं अर्थगौरव में भी सिद्धहस्त हैं। कादम्बरी के शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास के द्वारा राजकुमार चन्द्रापीड को पांचाली शैली में दिया गया उपदेश तो मानो हृदय को उत्साह से सम्पन्न कर देता है और साथ ही जीवन जीने के लिए एक श्रेष्ठतम मार्गदर्शन करता है। बाणभट्ट ने लक्ष्मी के वर्णन प्रसंग में कहा है –

"लब्धापि दुःखेन पाल्यते। न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। नरूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति।" इस प्रकार बाणभट्ट ने अपने काव्यों में छोटे-छोटे समासों का प्रयोग करके पांचाली शैली के सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिए हैं।

चित्रण की सजीवता तथा प्रभावशीलता उत्पन्न करने के लिए बाणभट्ट ने समास बहुल ओजगुण से युक्त शैली का स्थान-स्थान पर अवश्य आश्रय लिया है, परन्तु अन्यत्र छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग कर उन्होंने अपनी शैली को सशक्त तथा प्रभावोत्पादक बनाया है।

बाणभट्ट ने अटवी और सन्ध्या के वर्णन में दीर्घ समासों का प्रयोग किया है वहीं विरह वर्णन के अवसर पर लघुकलेवर प्रासादिक वाक्यों का प्रयोग किया है। बाण की लेखनशैली विषय वर्णन के अनुरूप उचित और सरस है। राजशेखर के मत में बाण की शैली में पांचाली रीति का सुन्दर निदर्शन प्राप्त होता है–

शब्दार्थयोः समो गुम्फः पांचालीरीतिरिष्यते।
शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।

पांचाली शैली का प्राण है– वर्ण्य-विषय के अनुरूप पदों का विन्यास जैसा अर्थ वैसा शब्द। यदि वर्ण्य-विषय घनघोर जंगल है तो कवि की वाणी उत्कृष्ट पदावली से मण्डित है। यदि

वह कामिनी के लावण्यरूप का चित्रण है तो कवि का पदविन्यास नितान्त ललित तथा कमनीय है। शब्द के ऊपर अखण्ड साम्राज्य बाण की विशेषता है।

त्रिलोचन कवि की दृष्टि में बाण की रसभाववती कविता के सामने अन्य कवियों की रचना केवल चपलता मात्र है।

हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।
भवेत् कविकुरंगाणां चापलं तत्र कारणम्।।

बाण रस सिद्ध कवि हैं बाण को शृंगार रस प्रिय है, परन्तु करुण, शान्त, भयानक आदि का भी वर्णन उन्होंने किया है। उनकी रचना में जहाँ प्रकृति का वर्णन है वहीं मनोभावों, अन्तर्द्वन्द्वों का मार्मिक विवेचन भी किया गया है। बाण ने लम्बे समास, अल्पसमास तथा समास रहित तीनों तरह का वर्णन किया है। भाव और भाषा का सुन्दर समन्वय ही बाण की विशेषता है।

महाकवि बाण के विषय में निम्नलिखित प्रशस्तियाँ प्रसिद्ध हैं –

- वश्यवाणी कविचक्रवर्ती – हर्षवर्धन
- कविताकामिनीकौतुक – जयदेव
- कविताकाननकेशरी – चन्द्रदेव
- महानयं भुजंग– हर्षवर्धन
- वाणीबाणस्य मधुरशीलस्य–धर्मदास
- गद्य कवीनां निकषं वदन्ति– आलोचक
- बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् – समालोचक
- तुरंगबाण – आलोचक
- रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
  सा किं तरुणी? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।। विदग्धमुखमण्डन धर्मदास।
- बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती। उदयसुन्दरी कथा, सोड्ढल।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही(√) का चिह्न लगाइए –

i) विलासवती तारापीड की पत्नी थी – ( )

ii) चन्द्रापीड का विवाह महाश्वेता के साथ हुआ था – ( )

iii) शूद्रक चन्द्रापीड का अवतार थे – ( )

iv) शुकनास तारापीड के प्रधान आमात्य थे – ( )

v) कादम्बरी में चन्द्रापीड उज्जयिनी के राजा थे – ( )

vi) शूद्रक का वर्णन कादम्बरी में हुआ है – ( )

vii) इन्द्रायुध वैशम्पायन का अवतार था – ( )

viii) कादम्बरी में वर्णित इन्द्रायुध घोड़ा था – ( )

ix) कादम्बरी शब्द का अर्थ मदिरा है – ( )

x) शुक के द्वारा आर्या छन्द सुनकर राजा आश्चर्यचकित हो गया – ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

i) चन्द्रापीड .... अवतार थे। (शिव के / चन्द्रमा के)

ii) कादम्बरी की नायिका .... है। (महाश्वेता / कादम्बरी)

iii) कादम्बरी के कथानक का मूलस्रोत ....है। (गुणाढ्य की बृहत्कथा / अवन्तिसुन्दरीकथा)

iv) कादम्बरी के मंगलाचरण में ....की वन्दना की गयी है। (शिव / त्रिगुणमयपरब्रह्म)

v) कादम्बरी का प्रधान रस .... है। (करुण / शृंगार)

vi) हर्षचरित .... काव्य है। (गद्य / नाटक)

vii) हर्षचरित .... का उदाहरण है। (कथा / आख्यायिका)

viii) हर्षचरित में ....उच्छ्वास हैं। (सात / आठ)

ix) वैशम्पायन पूर्वजन्म में ....था। (पुण्डरीक / शुक)

x) शब्दार्थयोः समो गुम्फः...........रीतिरिष्यते। (वैदर्भी / पांचाली)

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) बाणभट्ट के पिता का क्या नाम था ?

....

....

....

....

ii) बाणभट्ट की सर्वप्रथम रचना कौन सी है ?

....

....

....

....

iii) बाणभट्ट ने अपने काव्यों की रचना किस शैली में की है ?

....

....

....

....

iv) कादम्बरी के नायक कौन हैं ?

....

....

....

v) कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा का वर्णन है ?

....

....

....

....

vi) चन्द्रापीड की प्रेमिका कौन है ?

....

....

....

....

अभ्यास प्रश्न

1) 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' इस कथन की विवेचना कीजिए।

2) बाणभट्ट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2.4 दण्डी

प्रिय विद्यार्थियों! इकाई के इस खण्ड में आप महाकवि दण्डी के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

2.4.1 जीवन-वृत्त

संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में सरल, प्रांजल और भावपूर्ण गद्य के लेखक के रूप में दण्डी का नाम अमर है। दण्डी के विषय में जो सामग्री प्राप्त होती है उसका आधार 'अवन्तिसुन्दरीकथा' है। इसमें उन्होंने अपने वंश के विषय में बताते हुए कहा है कि उनके पूर्वज आनन्दपुर नामक स्थान पर निवास करते थे और यह क्षेत्र कुशिकगोत्रीय ब्राह्मणों का अधिष्ठान था। यहीं से एक शाखा नासिक्य प्रदेश चली गई जिसने अचलपुर को अपना निवासस्थान बनाया। उसी अचलपुर में श्रीनारायण स्वामी के घर पर दामोदर का जन्म हुआ और उन दामोदर के तीन पुत्रों में मध्यम पुत्र मनोरथ के भी चार पुत्रों में कनिष्ठ वीरदत्त की कनिष्ठतम सन्तान के रूप में दण्डी का जन्म हुआ। इसके अनुसार दण्डी किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के रचयिता भारवि के प्रपौत्र हैं। भारवि का ही दूसरा नाम दामोदर है। दण्डी की माता गौरी थीं। बाल्यावस्था में ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। एक चालुक्य राजा ने कांची नगर पर आक्रमण करके उसे लूट लिया। आत्मरक्षार्थ दण्डी भी वहाँ से अन्यत्र चले गए। बहुत समय तक वे इधर-उधर घूमते हुए उच्चशिक्षा प्राप्ति में लगे रहे, जब राजा नरसिंह वर्मा ने पुनः कांची पर अधिकार कर लिया तब वे भी कांची वापस आ गये और वहीं उन्होंने अवन्तिसुन्दरीकथा ग्रन्थ की रचना की। दण्डी ने काव्यादर्श में महाराष्ट्री प्राकृत और वैदर्भी रीति की प्रशंसा की है। दशकुमारचरित में कोची नगर, कावेरीपत्तन, आन्ध्र, चोल, कलिंग, आदि प्रदेशों के साथ विन्ध्याटवी का वर्णन किया गया है। इस आधार पर उन्हें दक्षिणात्य माना जाता है।

दण्डी के काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है एक दल छठीं शताब्दी ई0 का मत प्रस्तुत करता है तो दूसरा दल उन्हें 700 ई0 के आस पास मानता है। काव्यादर्श (1.34) में दण्डी ने प्रवरसेन विरचित सेतुबन्ध नामक प्राकृत काव्य का उल्लेख किया है जिससे यह सिद्ध

होता है कि उनका समय प्रवरसेन के बाद का है। प्रवरसेन का समय 410-440 ई0 के मध्य माना जाता है। इसलिए दण्डी 440 ई0 के पश्चात् ही हुए होंगे। दण्डी ने अवन्तिसुन्दरीकथा में बाणभट्ट की कादम्बरी के सारांश को ही देने का प्रयास किया है और साथ ही साथ काव्यादर्श (2.17) में '**यूनां यौवनप्रभवं तमः**' जैसे शुकनासोपदेश के पदों को भी अपनाया है। इस तरह दण्डी के समय निर्धारण के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि दण्डी का समय 650-750 ई. के मध्य रहा होगा।

2.4.2 कर्तृत्व

दण्डी की रचनाओं को लेकर विद्वानों में मतभेद है। शारङ्गधरपद्धति में दण्डी की तीन रचनाओं का उल्लेख किया गया है।

त्रयोऽग्नयस्त्रयो देवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः।।

शारङ्गधरपद्धति 174,राजशेखर।

शारङ्गधरपद्धति के उपरोक्त पद्य से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि दण्डी ने तीन प्रबन्धों की रचना की, परन्तु ये प्रबन्ध कौन-कौन से हैं इस पर विचार करते हैं। बहुधा विद्वानों ने दण्डी के द्वारा लिखित प्रबन्धों में काव्यादर्श को प्रथम स्थान पर, दूसरे स्थान पर दशकुमारचरित को और तीसरे स्थान पर अवन्तिसुन्दरीकथा को स्वीकार किया है। कुछ विद्वानों ने दण्डी के चौथे ग्रन्थ के रूप में द्विसन्धानकाव्य को भी स्वीकार किया है किन्तु बहुधा विद्वानों ने द्विसन्धानकाव्य को दण्डी की चौथी रचना स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है। इस तरह दण्डी ने एक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ और दो गद्यात्मक कथा ग्रन्थों की रचना की।

वाल्मीकि और व्यास के बाद तीसरा स्थान दण्डी को ही प्राप्त है।

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्।
कवी इति ततो व्यासे, कवयस्त्वयि दण्डिनि।।

वाल्मीकि के आने पर **कविः** शब्द बना व्यास के आने पर द्विवचन में **कवी** रूप हुआ तथा दण्डी का आविर्भाव होने पर ही बहुवचन रूप **कवयः** हो सका।

1) **काव्यादर्श** – यह तीन परिच्छेदों में निबद्ध एक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। इसके प्रथम परिच्छेद में 105 कारिकाएं हैं जिसमें काव्य का महत्त्व, लक्षण, भेद, महाकाव्य, गद्यकाव्य, भाषाभेद तथा काव्यगुणों पर विचार किया गया है। द्वितीय परिच्छेद में 368 कारिकाएं हैं जिसमें अलंकारों का विवेचन किया गया है जिसमें उपमा, रूपक, दीपक आदि के भेद-प्रभेदों का विस्तृत वर्णन है। तृतीय परिच्छेद 187 कारिकाएं हैं जिसमें यमक अलंकार, चित्रकाव्य तथा काव्य-दोषों का विवेचन है।

2) **दशकुमारचरित** – यह दण्डी रचित गद्यकाव्य है। जिसमें कथा और आख्यायिका नामक दोनों गद्य भेदों के लक्षण दिए गए हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण गद्य तीन भागों में उपलब्ध है।

1) **पाँच उच्छ्वासों की पूर्वपीठिका** – इसमें राजवाहन का जन्म (कुमारोत्पत्ति), मन्त्री पुत्रों का जन्म (द्विजोपकृतिः), सोमदत्त के साहसिक कार्य (सोमदत्तचरितम्), पुष्पोद्भव की साहसिक कथा (पुष्पोद्भवचरितम्), राजवाहन का अवन्तिसुन्दरी से विवाह (अवन्तिसुन्दरीपरिणयः) आदि का वर्णन है।

2) **आठ उच्छ्वासों का दशकुमारचरित** – इसमें आठ उच्छ्वास हैं कुमारों का चरित वर्णित है, राजवाहन-चरित, अपहारवर्मा-चरित, उपहारवर्मा-चरित, अर्थपाल-चरित, प्रमति-चरित, मित्रगुप्त-चरित, मन्त्रगुप्त-चरित, विश्रुत-चरित।

3) उत्तरपीठिका (उपसंहार) है।

दशकुमारचरित एक घटना प्रधान कथानक है। जिसमें नाना प्रकार की उल्लासमयी रोमांचक घटनाएँ पाठकों के हृदय में कभी विस्मय की और कभी विवाद की रेखाएँ खींचने में नितान्त समर्थ होती हैं। कभी पाठक भयानक जंगल के पास हिंसक पशुओं की चीत्कारों को सुनकर व्यग्र हो उठता है, तो कहीं समुद्र के बीच जहाज टूट जाने से अपने को पानी में काठ के सहारे तैरता हुआ पाता है। मित्रगुप्त के जीवन में जलयात्रा का एक बड़ा ही रोचक चित्र मिलता है। मित्रगुप्त ताम्रलिखित नामक प्रख्यात बंगीय बंदरगाह से किसी नवीन द्वीप में जहाज से जाता है। बहुत देर तक तैरने के बाद उसे एक काठ का तैरता हुआ टुकड़ा मिलता है। रात-दिन उसी के सहारे बिताने पर भवन नाविकों का एक जहाज दिखायी पड़ता है। जिसके कप्तान का नाम रामेषु है। भवनों के ऊपर एक युद्धतोप का आक्रमण होता है। भवन नाविक इस विपत्ति से विचलित हो जाते हैं। मित्रगुप्त जिसे जंजीरों से बाँधा गया था मुक्त हो गया। वह इस पोत के डाकुओं को अपनी वीरता से हराकर भवनों को बचाता है और उनसे पुरस्कृत होकर पुनः अपने स्वदेश लौट आता है। इसी प्रकार की रोमांच तथा साहस से भरी विस्मयावह घटनाओं से पूर्ण होने के कारण दशकुमारचरित का वातावरण नितान्त भौतिक है। दण्डी की प्रतिभा घटनाओं की यथार्थता में चरितार्थ होती है। यथार्थवाद यहाँ पूर्णतः प्रतिबिम्बित हो रहा है।

2.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

दण्डी की प्रशस्ति के रूप में **'दण्डिनः पदलालित्यम्'** अत्यधिक प्रसिद्ध है पदों का लालित्य, समासरहित सौम्य पदावली तथा अनुप्रासयुक्त नादसौन्दर्य दशकुमारचरित में मिलता है। सप्तम उच्छ्वास में जहाँ मन्त्रिगुप्त नियोष्ठवर्णों से अपना वृत्तान्त सुनाता है उस समय दण्डी को सुन्दर से सुन्दर पदावली की खोज करनी पड़ती है, जिससे वर्णसाम्यरूप अनुप्रास स्वतः स्फूर्त हो जाता है।

आचार्य दण्डी परिष्कृत गद्य-शैली के जन्मदाता हैं। गद्य का क्या स्वरूप होना चाहिए, उसमें भाव-भाषा-रस-अलंकारों का किस प्रकार समन्वय प्रस्तुत करना चाहिए, इसका आदर्श उन्होंने दशकुमारचरित में प्रस्तुत किया है। वे वैदर्भी शैली के कवि हैं। उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य गुणों की पराकाष्ठा है। उनमें भावों की अभिव्यंजना की शक्ति इतनी प्रबल है कि कठिन से कठिन राजनीति आदि के तत्त्वों को सरलता से भाषा में प्रस्तुत कर सकते हैं। भावानुकूल पदावली का संचयन उनकी प्रमुख विशेषता है।

श्रृंगार, करुण आदि के वर्णनों में उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य की मंजुल छटा दर्शनीय है, नखशिख वर्णन, प्रकृति-वर्णन आदि में समासयुक्त और सालंकार पदावली भी उनकी ही प्रौढ़ एवं परिष्कृत भाषा का रूप है। 'मधुराविजय' महाकाव्यकार गंगादेवी ने दण्डी की कृति को सरस्वती का मणिदर्पण बताया है।

आचार्यदण्डिनो वाचामचान्तामृतसम्पदाम् ।
विकासो वेधसः पत्न्या विलासमणिदर्पणम् ।।

कुछ आलोचकों का मत है कि कवित्व का परिपाक केवल दण्डी में ही दृश्य है, अन्यत्र नहीं।

कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः।

कल्पनाशील दण्डी की काव्यशैली वैदर्भी रीति का अनुसरण करती है। अर्थ की स्पष्टता, रस की सुन्दर अभिव्यक्ति, कल्पना की सजीवता और शब्द का लालित्य ये दण्डी की शैली के विशेष गुण हैं इसलिए इनके बारे में कहा गया है **'दण्डिनः पदलालित्यम्'**। इनकी रचना में माधुर्य गुण विशेष रूप से पाया जाता है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इन्होंने ओज की तरफ ध्यान नहीं दिया।

ओजः समासभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्।

इन्होंने लम्बे व छोटे समस्त प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया है। दण्डी का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। उन्होंने समाज के सभी पात्रों को लिया है क्योंकि इसमें राजा, राजकुमार, ब्राह्मण, भिक्षुक, चोर, राजकुमारियाँ, वेश्याएं, दम्भी और पाखण्डी सभी को सम्मिलित किया है। दण्डी ने ढूँढ-ढूँढकर सामाजिक बुराइयों को निकाला है। दण्डी को स्वच्छ समाज से प्रेम है, दम्भी और पाखण्डियों से नहीं। अतः कुलटा पत्नी धूमिनी, ऋषिमनोहारिणी काममंजरी, कार्मदक्ष उपहारवर्मा, योग्य आमात्य वसुरक्षित, धूर्ताधिराज विहारभद्र आदि के चरित्र का वर्णन करते हैं। भले-बुरे सभी कोटि के पात्र उनकी रचना में वर्णित हैं। उनमें मनोवांछित हर्षशोक, सुख-दुःख, रागद्वेष, प्रेम-घृणा, आशा-निराशा व्याप्त है। दण्डी आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी और व्यवहारवादी हैं। उन्होंने केवल सैद्धान्तिक शिक्षा न देकर व्यावहारिक शिक्षा भी दी है। व्यवहार कुशलता से जीवन सुखी बन सकता है यह दण्डी का लक्ष्य है। दण्डी निर्भीक, सुधारवादी, क्रान्तिकारी और व्यवहारकुशल कवि हैं।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

   i) दशकुमारचरित में आठ उच्छ्वास हैं – ( )

   ii) 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन दशकुमारचरित में है – ( )

   iii) दशकुमारचरित में दण्डी ने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया – ( )

   iv) दण्डी रचित गद्यकाव्य कादम्बरी है – ( )

2) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

   i) 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन है–

   क) दशकुमारचरित ख) मृच्छकटिक

   ग) रत्नावली घ) वेणीसंहार

   ii) दशकुमारचरित के अनुसार राजहंस की राजधानी थी–

   क) कुसुमपुर ख) उज्जयिनी

   ग) पुष्पपुरी घ) विदिशा

   iii) रोमांचक घटनाओं का वर्णन किस काव्य में है–

   क) हर्षचरित ख) दशकुमारचरित

   ग) कादम्बरी घ) वासवदत्ता

   iv) दशकुमारचरितम् में दण्डी ने किस रीति का प्रयोग किया–

   क) गौणी ख) वैदर्भी

   ग) पांचाली घ) अवन्ती

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) दण्डी की कितनी रचनाएं हैं ?

....

....

....

....

ii) 'दण्डिनः पदलालित्यम्' यह प्रशस्ति किस कवि के लिए कही गई है ?

....

....

....

....

iii) काव्यादर्श में कितने परिच्छेद हैं ?

....

....

....

....

iv) दण्डी के पिता का क्या नाम था ?

....

....

....

....

अभ्यास प्रश्न

1) दण्डी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।

2) दण्डी के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

2.5 सारांश

सुबन्धु, बाण तथा दण्डी का संस्कृत गद्य-साहित्य में मूर्धन्य स्थान है। सुबन्धु की एकमात्र उपलब्ध कृति वासवदत्ता है। इसका कथानक पूर्णतः काल्पनिक है। अतः इस रचना को कथा की श्रेणी में स्थान दिया गया है। शृंगार रस प्रधान इस ग्रन्थ में राजकुमार कन्दर्पकेतु एवं राजकुमारी वासवदत्ता के प्रेम एवं विवाह का वर्णन इस गद्यकाव्य का प्रतिपाद्य विषय है। इनकी रचना में ओजगुण, समास बहुलता, कठिन पद-विन्यास, पाण्डित्य प्रदर्शन, गौडी रीति आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मिलता है। सुबन्धु के पश्चात् बाण ने कादम्बरी, हर्षचरित आदि ग्रन्थों की रचना कर संस्कृत साहित्य में अपना स्थान बनाया। काव्य और नाटक के

क्षेत्र में जो स्थान कालिदास को प्राप्त हुआ गद्यकाव्य के क्षेत्र में वही स्थान बाणभट्ट को प्राप्त है। बाण ने हर्षचरित एवं कादम्बरी में स्वयं अपना परिचय दिया है। कादम्बरी में बाण ने तीन जन्मों की कथा का वर्णन किया है जिसका आधार गुणाढ्य की बृहत्कथा है। बाण की शैली गद्यकवियों के लिए आदर्श है। बाण पांचाली रीति के प्रयोग में निपुण थे। उनकी रचनाओं में एक ओर छोटे-छोटे सामासिक पदों का प्रयोग है तो दूसरी ओर सन्ध्या और अटवी वर्णन में लम्बे-लम्बे सामासिक पदों का भी प्रयोग मिलता है। बाण रससिद्ध कवि हैं। उनका प्रिय रस श्रृंगार है। भाषा और भावों का सुन्दर समन्वय बाण के काव्य की विशेषता है। सरल, प्रांजल और भावपूर्ण गद्य लेखक के रूप में दण्डी का नाम श्रेष्ठ है। अवन्तिसुन्दरीकथा एवं दशकुमारचरित दण्डी की ही रचनाएं हैं। उन्होंने अविन्तसुन्दरीकथा में अपने वंश के विषय में बताया है। रोमांच तथा साहस से पूर्ण विस्मयावह घटनाओं से पूर्ण होने के कारण दशकुमारचरित का कथानक नितान्त भौतिक है। उनकी प्रतिभा घटनाओं की यथार्थता में चरितार्थ होती है। दण्डी पदों के सुन्दर प्रयोग में निपुण थे, इसलिए **'दण्डिनः पदलालित्यम्'** यह उक्ति उनके सन्दर्भ में प्रचलित हुई। उनकी कृति में वैदर्भी रीति, प्रसाद और माधुर्य गुण, भावों की सुन्दर अभिव्यंजना, प्रकृति-वर्णन आदि का सुन्दर निदर्शन मिलता है। इस प्रकार इस इकाई के द्वारा आपने यह जाना कि सुबन्धु, बाण तथा दण्डी संस्कृत गद्य साहित्य के ऐसे स्तम्भ हैं जिनके बिना गद्य-साहित्य की कल्पना कर पाना नितान्त असम्भव है।

2.6 शब्दावली

निपुण – कुशल

कथानक – संक्षिप्त कथा, कथासार

पूर्ववर्ती – पहले से स्थित

अनुरक्त – आसक्त

उद्यत – तत्पर, प्रयत्नशील

अनुग्रह – उपकार करना

बहुलता – अधिकता, सघनता

समन्वय – पारस्परिक सम्बन्ध, संयोग

विलक्षण – असाधारण

आविर्भाव – उत्पत्ति, जन्म लेना

आत्मसात् – अपना, आत्माधीत

सन्दिग्ध – सन्देहयुक्त

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – डॉ कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल, विजयकुमार, कटरा, प्रयागराज।
- संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',चौखम्बा भारती अकादमी,वाराणसी।
- संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ आचार्य बलदेव उपाध्याय,शारदा निकेतन,वाराणसी।

- संस्कृत साहित्य का वृहद् इतिहास पंचम खण्ड – गद्य, प्रधान सम्पादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
- कादम्बरी – जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

2.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (i) सही (ii) गलत (iii) गलत (iv) सही
2) (i) (क) वासवदत्ता (ii) (ख) कन्दर्पकेतु/वासवदत्ता (iii) (क) श्लेष
3) (i) श्लेष (ii)गौडी (iii) तमालिका (iv) मकरन्द

बोध प्रश्न 2

1) (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) सही (v) सही (vi) सही (vii)गलत (viii) सही (ix) सही (x) सही
2) (i) चन्द्रमा के (ii) कादम्बरी (iii) गुणाढ्य की बृहत्कथा (iv) त्रिगुणमयपरब्रह्म (v) शृंगार (vi) गद्य (vii) आख्यायिका (viii) आठ (ix) शुक (x) पांचाली
3) i) बाणभट्ट के पिता का नाम चित्रभानु था ।
   ii) बाणभट्ट की सर्वप्रथम रचना हर्षचरित है ।
   iii) बाणभट्ट ने अपने काव्यों की रचना पांचाली शैली में की है।
   iv) कादम्बरी के नायक चन्द्रापीड हैं।
   v) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा का वर्णन है।
   vi) चन्द्रापीड की प्रेमिका कादम्बरी है।

बोधप्रश्न 3

1) (i) सही (ii) सही (iii) सही (iv) गलत
2) (i) (क) दशकुमारचरित (ii) (ग) पुष्पपुरी (iii) (ख) दशकुमारचरित (iv) (ख) वैदर्भी
   i) दण्डी की तीन रचनाएं हैं ।
   ii) 'दण्डिनः पदलालित्यम्' यह प्रशस्ति दण्डी के लिए कही गई है।
   iii) काव्यादर्श में तीन परिच्छेद हैं।
   iv) दण्डी के पिता का नाम वीरदत्त था।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 3 अम्बिकादत्त व्यास, विश्वेश्वर पाण्डेय, हृषीकेश भट्टाचार्य तथा अन्य

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के जीवन के विषय में बता सकेंगे।

- अम्बिकादत्त व्यास की रचनाओं के बारे में बता सकेंगे ।
- हृषीकेश भट्टाचार्य का परिचय बताते हुए उनकी रचनाओं की विशेषताओं से परिचित होंगे।
- आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय के व्यक्तित्व को बताकर उनकी कवित्व शक्ति का वर्णन कर सकेंगे।
- पण्डिता क्षमाराव के जीवन की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।
- संस्कृत गद्य के कवियों में रामशरण त्रिपाठी की रचनाएं भी विशेष स्थान रखती हैं, इस तथ्य को समझ सकेंगे।
- धनपाल तथा वादीभसिंह के व्यक्तित्व को बताते हुए उनकी लेखन शैली का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप संस्कृत गद्य से सम्बन्धित कुछ प्रमुख कवियों, रचनाकारों के जीवन-वृत्त तथा उनकी रचनाओं का परिचय प्राप्त करेंगे। इसके पूर्व की इकाई में आपने बाणभट्ट, सुबन्धु, दण्डी आदि अन्य पूर्ववर्ती प्रमुख कवियों के जीवन-वृत्त का परिचय प्राप्त करते हुए उनकी रचनाओं का अध्ययन किया है। जिससे आपको अम्बिकादत्त व्यास से पूर्व प्रतिष्ठित गद्यकारों के जीवन तथा उनकी काव्य-शैली की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त हुआ।

संस्कृत गद्य की परम्परा प्राचीन है व्यास से लेकर बाणभट्ट ,दण्डी आदि कवियों ने गद्य रचना करके भारतीय संस्कृत साहित्य में अपूर्व योगदान दिया है। उनकी रचनाओं में कथा और पद्य के माध्यम से जीवन से लेकर राष्ट्र तक की सभी उत्कृष्टताओं का वर्णन पाया जाता है। साथ ही प्राचीन कवि अपनी गद्य-शैली की विशेषताओं के कारण सम्पूर्ण साहित्य जगत् में प्रतिष्ठा के विषय रहे हैं।

इस इकाई में आप पण्डित अम्बिकादत्त व्यास से लेकर हृषीकेश भट्टाचार्य, विश्वेश्वर पाण्डेय तथा पण्डिता क्षमाराव के अतिरिक्त अन्य कुछ प्रमुख संस्कृत गद्यकवियों के जीवन-वृत्त तथा उनकी रचनाओं का अध्ययन करेंगे। जिससे आप परवर्ती गद्य की विशेषताओं से परिचित होते हुए इन प्रमुख कवियों की शैलीगत विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

3.2 पण्डित अम्बिकादत्त व्यास

3.2.1 जीवन-वृत्त

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का नाम आधुनिक संस्कृत गद्यकारों में बहुत आदरणीय है। इनके पूर्वजों का मूल स्थान जयपुर है। जयपुर की ही रावत जी का धूला नामक गाँव में व्यास जी का जन्म हुआ था। यह पाराशर गोत्री ब्राह्मण थे साथ ही यजुर्वेदीय भी थे । इनके वृद्ध पितामह श्री गोविन्दराम जी राजस्थान के मानसिंह के पुत्र दुर्जनसिंह के वंश में उत्पन्न दलेल सिंह के राज्य पण्डित थे। इन्हीं गोविन्दराम जी के प्रपौत्र पण्डित राजाराम जी कभी तीर्थयात्रा के लिए काशी आए थे। स्थानीय लोगों के स्नेह के कारण वे काशी में ही बस गए। पण्डित राजाराम जी के बड़े पुत्र का नाम पण्डित दुर्गादत्त था जो संस्कृत और हिन्दी साहित्य की विद्वत्ता से ओत-प्रोत तो थे ही बल्कि लेखक भी थे। इनका विवाह जयपुर के सिलावट में हुआ था जहाँ इनके द्वारा द्वितीय पुत्र के रूप में अम्बिकादत्त का जन्म चैत्र शुक्ल अष्टमी संवत् 1915 तदनुसार 1858 ईस्वी को हुआ। इनकी प्रतिभा बचपन से ही

विलक्षण थी। 12 वर्ष की छोटी सी अवस्था से ही वह गोष्ठियों में सम्मिलित होने जाया करते थे। अम्बिकादत्त व्यास जी की शिक्षा-दीक्षा काशी में सम्पन्न हुई। पण्डित ताराचरण जी से व्यास जी ने साहित्यदर्पण और काव्यप्रकाश का अध्ययन किया। इसी प्रकार कुंज लाल बाजपेई से न्यायशास्त्र का और राममिश्र शास्त्री से सांख्यदर्शन का अध्ययन किया । आयुर्वेद और बंग्ला आदि भाषाओं की शिक्षा इन्होंने विश्वनाथ कविराज जी से पाई थी। 1928 में जब इनका विवाह हुआ तब वह 13 वर्ष के थे। 16 वर्ष की उम्र में इनकी माता का तथा 22 वर्ष की उम्र में इनके पिता का भी देहावसान हो गया।

3.2.2 कर्तृत्व

विलक्षण प्रतिभासम्पन्न पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी अपने अध्ययन और मनन से कभी विरत नहीं रहे। इनकी कविता लिखने की गति को देखकर लगता है कि इनमें कविता करने की अद्भुत शक्ति थी। 1 घंटे में 100 श्लोकों की रचना कर देने पर इन्हें घटिकाशतक की उपाधि दी गई।

अम्बिकादत्त व्यास को शतावधान भी कहा गया है। उनका समस्त जीवन संस्कृत और सनातन धर्म के प्रचार प्रसार में समर्पित था। बिहार के मधुबनी में उन्होंने अध्यापन किया। उन्होंने धर्म-सभा-सुधानिधि, संचारिणी सभा जैसी संस्थाओं की स्थापना की। पटना में बिहार संस्कृत जीवन को पुनर्जीवित करने में इन्हीं का योगदान रहा है। साहित्य के अलावा न्याय, वेदान्त, दर्शन, व्याकरणशास्त्र के भी व्यास जी आधिकारिक विद्वान् थे। उन्होंने आर्यभाषा सूत्रधार नामक एक हिन्दी व्याकरण लिखना प्रारम्भ किया था जो दुर्भाग्यवश अपूर्ण रह गया। व्यास जी अप्रतिम प्रतिभासम्पन्न थे।वस्तुतः अम्बिकादत्त व्यास जी ने कुल 80 रचनाएं की थीं। कतिपय कारणों से सभी रचनाओं के नाम उपलब्ध नहीं होते। उनके द्वारा रचित शिवराजविजय नामक संस्कृत उपन्यास अत्यन्त प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण है। सामवतम् नाटक, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्, बिहारी-विहार और अबोधनिवारण व्यास जी द्वारा रचित रचनाएं हैं। पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी दीर्घायु नहीं रहे। 42 वर्ष की अवस्था में इनका देहावसान हो गया था। उस समय ये गवर्नमेंट संस्कृत कालेज पटना में प्रोफेसर थे।

शिवराजविजय

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसकी रचना 1945 से 1950 के बीच में हुई थी। शिवराजविजय उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक 3 विरामों में विभक्त है। प्रत्येक विराम में चार निःश्वास हैं।

3.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

शिवराजविजय में व्यास जी ने पांचाली रीति का प्रयोग किया है। इस उपन्यास में उन्होंने छोटे और लम्बे पदों का प्रयोग किया है। इस उपन्यास का प्रधान रस वीर है। इसके कथानक में 2 स्वतन्त्र कथाएं हैं एक के नायक के रूप में वीर शिवाजी तथा दूसरे के नायक के रूप में रघुवीर सिंह है। प्रायः अन्य सभी प्रतिनिधि पात्र हैं। शिवाजी तथा उनके सहयोगी देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत हैं। इस उपन्यास में कवि द्वारा नाटकीय संवादों की योजना प्रस्तुत करके संस्कृत गद्यकाव्य के लिए एक नवीन दिशा प्रदान की गई है। शिवराजविजय की रचना से काव्य के परम्परागत प्रयोजनों के अतिरिक्त संस्कृत कवियों को एक नई दिशा में प्रेरणा भी प्रदान की गई है। इसी उपन्यास से बाद के कवियों को नई विधा की रचना में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिली है।

3.3 आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय

3.3.1 जीवन-वृत्त

आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय के पूर्वज भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण थे। मूल रूप से वह पर्वतीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम लक्ष्मीधर पाण्डेय था। लक्ष्मीधर सभी शास्त्रों में प्रवीण विद्वान् थे। इन लोगों का मूल स्थान उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जनपद के पटिया नामक ग्राम में था। विश्वेश्वर पाण्डेय के पिता लक्ष्मीधर जी काशी आ गए थे। वह सन्तान के अभाव में बहुत दुःखी थे। इस कारण उन्होंने अपना पूरा जीवन बाबा विश्वनाथ की आराधना में समर्पित कर दिया। ऐसी कथा प्रचलित है की विश्वेश्वर पाण्डेय को बाबा विश्वनाथ की कृपा से पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। अलौकिक कृपा से उत्पन्न पुत्र का नाम विश्वेश्वर रखा गया। इन्होंने सभी शास्त्रों का अध्ययन अपने पिता लक्ष्मीधर के चरणों में बैठकर काशी में ही किया। अपनी 5 वर्ष की अवस्था में ही वह बुद्धि की विचित्रता का प्रदर्शन करने लगे थे। विश्वेश्वर पाण्डेय जी की विशेषता थी की वे जिन-जिन शास्त्रों का अध्ययन करते थे उन-उन शास्त्रों में ही नए ग्रन्थों का निर्माण प्रारम्भ कर देते थे।

3.3.2 कर्तृत्व

आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय द्वारा रचित ग्रन्थ निर्णय सागर प्रेस मुम्बई और कतिपय काशी से संस्कृत ग्रन्थमाला के द्वारा प्रकाशित हुए हैं जो आज भी उपलब्ध होते हैं। यह व्याकरण, न्याय और काव्यशास्त्र के अद्वितीय विद्वान् थे। उन्होंने महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी की विशद् व्याख्या के रूप में वैयाकरणसिद्धान्तसुधानिधि नामक ग्रन्थ की रचना की जो पाणिनीय व्याकरण से सम्बन्धित प्रमुख ग्रन्थ माना जाता है।

इसके अलावा अलंकारकौस्तुभ, अलंकारप्रदीप, रसचन्द्रिका ,अलंकारमुक्तावली इनके द्वारा रचित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ हैं। काव्य ग्रन्थों में – रोमावलीशतक, आर्यासप्तशती आदि के नाम आते हैं।

गद्यकाव्य से सम्बन्धित विश्वेश्वर पाण्डेय की रचना का नाम मन्दारमंजरी है। यह ग्रन्थ पूर्व और उत्तर दो भागों में विभक्त है। इसका पूर्वार्ध विश्वेश्वर जी द्वारा रचित है और उत्तरार्ध इनके किसी शिष्य की कृति है। किन्तु यह समग्र रूप में उपलब्ध नहीं है। मन्दारमंजरी के पूर्वभाग का प्रारम्भ आर्या छन्द से हुआ है। इन प्रारम्भिक श्लोकों में ताण्डव नृत्य में प्रशक्त शिव, गौरी, गणेश, लक्ष्मी एवं सरस्वती आदि देवताओं की वन्दना की गई है। मन्दारमंजरी की कथा का प्रारम्भ प्राची दिशा के वर्णन से होता है। यहाँ पर मगध प्रदेश में पुष्पपुर या पाटलिपुत्र नाम का एक नगर था। वहाँ राजा राजशेखर राज्य करता था। उसकी रानी का नाम मलयवती था। इसमें राजा राजशेखर एवं रानी मलयवती के पुत्र राजकुमार चित्रभानु और विद्याधर चन्द्रकेतु एवं चन्द्रलेखा की पुत्री मन्दारमंजरी के प्रणय और परिणय का वर्णन है। इसी राजा द्वारा उत्कृष्ट यज्ञ सम्पन्न किए जाने और इसकी रानी मलयवती के गर्भवती होने के पश्चात् पुत्र की प्राप्ति और उस पुत्र के संस्कारों आदि का वर्णन करते हुए कवि ने राजा को उदयगिरि, अमरावती, गंधमादन गिरी होते हुए कैलाश पर्वत तक पहुंचाया है।

3.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

विश्वेश्वर पाण्डेय कृत मन्दारमंजरी गद्यकाव्य का एक कथा-ग्रन्थ है। यद्यपि विश्वेश्वर बाण और सुबन्धु की कृतियों से बहुत प्रभावित थे फिर भी उन्होंने मन्दारमंजरी की प्रस्तावना में इस बात का स्पष्ट उल्लेख कर दिया है कि मेरी मन्दारमंजरी समस्त काव्यों से विचित्र

होगी। मन्दारमंजरी की कथा कादम्बरी की कथा के तुल्य उलझी हुई है। कथा में उपकथा का प्रवाह चलता जाता है। मूलकथा छूट जाती है और उपकथाओं का वर्णन प्रवाहित रहता है। अन्त में कथा को जोड़ दिया जाता है। श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, व्यतिरेक, विरोधाभास, परिसंख्या आदि अलंकारों के प्रयोग मन्दारमंजरी में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इतने अलंकारों का प्रयोग करने के पश्चात् भी विश्वेश्वर जी की शैली के कारण यह ग्रन्थ अलंकारों के बोझ से कहीं भी बोझिल दिखाई नहीं देता। पाण्डेय जी की शैली में लघु तथा दीर्घ दोनों प्रकार के वाक्यों का प्रयोग होता है। सभी जगहों पर समासबहुल पदावली का प्रयोग नहीं है बल्कि ऐसे प्रयोग मन्दारमंजरी में यत्र-तत्र ही पाए जाते हैं। मन्दारमंजरी के पारस्परिक संवादों में भाषा का प्रवाह बहुत ही प्रांजल है। इस प्रकार मन्दारमंजरी कवि की गद्यकाव्य में रचित एकमात्र प्रौढ़ कृति है। बाण और सुबन्धु से सर्वथा प्रभावित होते हुए भी कवि ने अपनी इस कृति में नवीनता लाने का भरपूर प्रयास किया है ।

बोध प्रश्न 1

1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (√) कथन का चयन कीजिए –
   i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास एक नाटककार थे – ( )
   ii) अम्बिकादत्त व्यास के पूर्वज कलकत्ता के निवासी थे – ( )
   iii) विश्वेश्वर पाण्डेय को 'शतावधान' कहा गया है – ( )
   iv) 'अलंकारप्रदीप' विश्वेश्वर पाण्डेय की कृति है – ( )
2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–
   i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का जन्म चैत्र शुक्ल........................को हुआ था।
   ii) 1 घण्टे में 100 श्लोकों की रचना करने के कारण अम्बिकादत्त व्यास को .... कहते हैं।
   iii) मन्दारमंजरी .... भागों में विभक्त है।
3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में लिखिए –
   i) 'आर्यभाषासूत्राधार' किसकी रचना है?

   ....

   ....

   ii) 'शिवराजविजय' के रचयिता कौन हैं ?

   ....

   ....

   iii) विश्वेश्वर पाण्डेय का जन्म कहाँ हुआ ?

   ....

   ....

   iv) 'अलंकार-कौस्तुभ' किसकी रचना हैं ?

   ....

   ....

   ....

v) 'मन्दारमंजरी' के लेखक कौन हैं ?

....

....

....

अभ्यास प्रश्न

i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के जीवन-वृत्त पर प्रकाश डालिए।

ii) विश्वेश्वर पाण्डेय के शैलीगत वैशिष्ट्य प्रकाश डालिए।

3.4 हृषीकेश भट्टाचार्य

3.4.1 जीवन-वृत्त

पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य का जन्म बंगाल में हुआ था। बंगाल में ही इनकी शिक्षा-दीक्षा भी हुई थी। उच्चतर अध्ययन के लिए भट्टाचार्य जी लाहौर गए थे जहाँ उन्होंने गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज में अध्ययन किया तथा वहीं पर उन्होंने प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। लाहौर में ही संस्कृत, अंग्रेजी आदि की शिक्षा प्राप्त कर परीक्षाएं देने के कारण भट्टाचार्य जी की विचार परिधि, चिन्तन शक्ति, दृष्टिकोण आदि अत्यन्त व्यापक हो गए थे। इन्होंने 'विद्योदय' नामक संस्कृत-पत्रिका का 44 वर्ष सम्पादन किया। ये सामयिक विषयों पर विनोदपूर्ण शैली में लेख लिखते रहे। प्रो. मैक्समूलर भी इनकी लेखन शैली से प्रभावित थे, अतः इनके प्रशंसक रहे। इनके लेखों का संग्रह 'प्रबन्धमंजरी' नाम से मुद्रित हुआ है। हृषीकेश भट्टाचार्य का समय 1850 से लेकर 1913 तक माना गया है।

3.4.2 कर्तृत्व

लघुकथा और निबन्धों में हृषीकेश भट्टाचार्य का नाम अत्यन्त प्रतिष्ठित है। उनकी कृतियों में विद्योदय, संस्कृतचन्द्रिका आदि का नाम आता है। विद्योदय नामक पत्रिका के सम्पादक हृषीकेश भट्टाचार्य थे। हृषीकेश भट्टाचार्य ने उदर-दर्शनम् को ही ब्रह्म बताते हुए 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' की शैली में कुछ उदर सूत्र भी लिखे हैं। कालिदास नाम से भी इनका संस्कृत गद्य में निबन्ध है। यह निबन्ध बहुत प्रतिष्ठित है। विद्योदय पत्रिका मे लिखे निबन्धों के संकलन के रूप में पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने भट्टाचार्य जी के निबन्धों का संकलन 'प्रबन्धमंजरी' नामक शीर्षक से प्रकाशित किया था। हृषीकेश भट्टाचार्य साहित्य मर्मज्ञ, अनुवादक और बांग्ला व्याकरण के भी प्रणेता रहे हैं ।

3.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

हृषीकेश भट्टाचार्य की लेखन-शैली उस कालखण्ड में अन्य कवियों और लेखकों की अपेक्षा व्यक्तिगत विचारों को उन्नत बनाकर सुन्दर ललित शैली में प्रस्तुत करते हुए निबन्धों की रचना करने में प्रतिष्ठित रही है। कालिदास जैसे निबन्ध तो उस कालखण्ड में विभिन्न पत्रिकाओं में छपते रहे होंगे फिर भी इनके द्वारा इस शीर्षक पर लिखा गया 'कालिदासः' नामक निबन्ध विद्वानों में आदर का विषय बना था । 'प्राप्तपत्रम्' नामक शीर्षक से उन्हें मिले हुए किसी पत्र का सन्दर्भ देते हुए कभी वे किसी विषय पर स्वयं लिखते थे अथवा पुणे में निवास करने वाली अनामिका देवी की ओर से मिले पत्र के रूप में महिलाओं के महत्त्व पर और जो उनकी दशा स्वार्थी भारतीयों ने बना दी थी ,उस पर अपने सटीक विचार रख देते थे। हृषीकेश भट्टाचार्य के गद्य की विशेषता यह थी की उनकी रचनाओं में बाणभट्ट की शैली

के भी दर्शन होते थे जैसे– वर्णनात्मक लम्बे वाक्य। भट्टाचार्य जी की संस्कृत शैली बिल्कुल नवीन और बाण के समान सुन्दर थी। इसीलिये ये 'अभिनव बाण' कहे जाते थे। इनकी बातें सर्वथा नवीन होती थीं और नए ढंग से कही हुई होती थीं। हृषीकेश भट्टाचार्य के गद्य की दो विशेषताएं इस श्लोक में देखने को मिलेंगी–

मुद्रयतिवदनविवरं मृतभाषावादिनां मुहेराणाम् ।
स्मरयति च भट्टबाणं भट्टाचार्यस्य सा वाणी ।।

3.5 पण्डिता क्षमाराव

3.5.1 जीवन-वृत्त

क्षमाराव का जन्म 4 जुलाई 1890 को हुआ था। इनका जन्म-स्थान पुणे बताया गया है। इनके पिता का नाम पण्डित शंकर पांडुरंग था। ये संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। जब पण्डिता क्षमाराव 3 वर्ष की थीं तभी उनके पिता जी का देहावसान हो गया था। चाचा ने इनका पालन-पोषण किया था। वे राजकोट में बैरिस्टर थे। क्षमा की छोटी बहन का नाम तारा था। दोनों बहनें चाचा के घर रहते हुए भी अपने चचेरे भाइयों के पाठों को सुन-सुन कर याद कर लेती थीं। इन्हें पाठशाला नहीं भेजा जाता था। 12 वर्ष की आयु में ही तारा का भी देहावसान हो गया। इसी क्रम में क्षमा ने सौराष्ट्र से मैट्रिक की परीक्षा पास की। इसके बाद मुम्बई के विल्सन कॉलेज में क्षमा ने प्रवेश लिया जहाँ पर काणे साहब उनके शिक्षक रहे। अध्ययन की पूर्ति के पूर्व ही 20 वर्ष की आयु में क्षमा जी का विवाह मुम्बई के एक प्रसिद्ध डॉक्टर राव से हो गया। क्षमा जी ने अपने चिकित्सक पति के साथ यूरोप का भ्रमण किया। फ्रेंच, जर्मन तथा अंग्रेजी भाषाओं का खूब अभ्यास भी किया। कालक्रम के अनुसार 1953 में इनके पति का भी देहावसान हो गया। आजादी की लड़ाई तथा गाँधी जी के सत्याग्रह के प्रति आस्था होने के कारण क्षमा जी ने स्वतन्त्रता संग्राम पर तीन महाकाव्यों की रचना की। अयोध्या की संस्कृत कल्याण संस्था द्वारा 1938 में इन्हें पण्डिता की उपाधि से अलंकृत किया गया था। इसके पश्चात् 1942 ईस्वी में 'साहित्य चन्द्रिका' उपाधि से विभूषित हुईं।

3.5.2 कर्तृत्व

पण्डिता क्षमाराव की निम्नलिखित कृतियाँ उपलब्ध हैं –

1) **सत्याग्रहगीता**– इसमें कुल 18 अध्याय हैं। अनुष्टुप् छन्द में गीता के अनुकरण पर गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन के वर्णन के साथ 659 पदों में यह पुस्तक 1932 में प्रकाशित हुई। क्षमा जी ने इस पुस्तक में भगवद्गीता की स्थितप्रज्ञ का और गाँधी जी की महत्त्वता की एक जैसी तुलना की है ।

2) **स्वराज्यविजयः** – इस पुस्तक में कुल 45 अध्याय हैं। यह ग्रन्थ 1962 में प्रकाशित हुआ। गाँधी जी की जीवन गाथा के साथ-साथ भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास का वर्णन इस पुस्तक में क्षमा जी ने किया है ।

3) **मीरालहरी** – यह खण्डकाव्य है। यह ग्रन्थ 1944 में प्रकाशित हुआ। इसमें 2 खण्ड हैं। पूर्वखण्ड में 91 श्लोक तथा उत्तरखण्ड में 44 श्लोक हैं। पूरा का पूरा खण्डकाव्य शार्दूलविक्रीडित छन्द में रचा गया है। इसमें मीरा के उदात्त चरित्र का वर्णन किया गया है।

4) **तुकारामचरितम्** – यह महाकाव्य है। इसका प्रकाशन 1950 में हुआ। यह नौ सर्ग तथा 435 श्लोकों में निबद्ध है। इस महाकाव्य में क्षमाराव ने महाराष्ट्र के भक्त शिरोमणि तुकाराम जी के चरित्र का उदात्त चित्रण किया है।

5) **श्री रामदासचरितम्** – यह भी महाकाव्य है। 1953 में इसका प्रकाशन हुआ। छत्रपति वीर शिवाजी के गुरू रामदास का चरित्र इस महाकाव्य में वर्णित किया गया है।

6) **श्री ज्ञानेश्वरचरित्र** – इसमें आठ सर्ग हैं। यह भी महाकाव्य है। 1954 में सन्त योगी ज्ञानेश्वर का चरित्र वर्णन इस महाकाव्य में कवि के द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त उत्तर सत्याग्रह गीता भी पण्डिता क्षमाराव जी की रचना है।

7) **ग्रामज्योतिः** – 1955 में ग्रामज्योतिः के अन्तर्गत तीन कथाओं का संग्रह किया गया।

   क) **रेवा की कथा** – इसमें कृषक महिला के त्याग की कथा का वर्णन किया गया है जिसमें लगान न देने के कारण उसके घर में आग लगा दी जाती है ।

   ख) **कटुविपाक कथा** – इसमें किसान के सत्याग्रह किए जाने का वर्णन है जो कभी सत्याग्रही नहीं था।

   ग) **वीरभा** – इस कथा में एक ऐसी महिला की गाथा का वर्णन किया गया है जिसने प्राणों की चिन्ता न करके राष्ट्रीय ध्वज को अपमानित होने से बचाया है। उपर्युक्त सभी कथाएं श्लोकों में लिखी गई हैं। इसके अतिरिक्त कथापंचकम् है जो पाँच कथाओं के लिए प्रसिद्ध है।

कथा मुक्तावली पूर्णरूप से गद्यमय है। इसके अतिरिक्त एकांकी, नाटक ,तीन अंकों वाले चार नाटक, 35 लघुकथाएं जिनमें 23 अप्रकाशित हैं। पत्र-साहित्य, यात्रा-विवरण आदि अनेक संस्कृत गद्य की रचनाएं प्राप्त हैं। इन रचनाओं में पण्डिता क्षमाराव जी की देशभक्ति, साहित्य-प्रेम और पूर्णनिष्ठा की झलक दिखाई देती है।

3.5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

पण्डिता क्षमाराव की भाषा-शैली में समरसता, प्रसाद और प्रांजलता होने के साथ-साथ उत्कृष्टता के दर्शन होते हैं। विषय की नवीनता और जीवन की अनुभूतियों की गहराई के कारण क्षमाराव के गद्य और पद्य दोनों में एक अद्भुत शैली का दर्शन होता है। इनकी सभी रचनाओं को देखने से पता चलता है कि पण्डिता क्षमाराव का दृष्टिकोण बिल्कुल विशिष्ट और आधुनिक था। यह बात उनकी सभी रचनाओं में प्रतिबिम्बित होती हैं। रस वर्णन, अलंकार वर्णन से लेकर समाज प्रयोग, प्रकृति वर्णन और समाज की समसामयिक समस्याओं से लेकर राष्ट्र के गौरव पथ का चिन्तन आपकी शैली की विशेषता रही है । आपने अपनी लेखनी से कुरीतियों का विरोध किया है । उनके प्रति विद्रोह का भाव आपके लेखन में झलकता है। इसके अतिरिक्त भक्ति भाव में तन्मयता भी आपकी शैली की विशेषता है।

बोध प्रश्न 2

1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (√) कथन का चयन कीजिए –

   i) हृषीकेश भट्टाचार्य की शिक्षा लाहौर में नहीं हुई थी – ( )

   ii) 'चण्डीशतक' विश्वेश्वर पाण्डेय की कृति है – ( )

   iii) हृषीकेश भट्टाचार्य 'विद्योदय' नामक पत्रिका के सम्पादक थे – ( )

   iv) संस्कृत कल्याण संस्था द्वारा क्षमाराव को 'पण्डिता' की उपाधि दी गयी – ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

i) सत्याग्रहगीता में कुल .... अध्याय हैं।

ii) स्वराज्यविजय .... की रचना है।

iii) मीरालहरी .... है।

iv) प्राप्तपत्रम् का सम्बन्ध .... से है।

v) कथामुक्तावली .... की रचना है।

अभ्यास प्रश्न

i) हृषीकेष भट्टाचार्य के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

ii) पण्डिता क्षमाराव की रचनाओं के विषय में संक्षेप में लिखिए।

3.6 डॉ. रामशरण त्रिपाठी

3.6.1 जीवन-वृत्त

डॉ. रामशरण त्रिपाठी का जन्म बाँदा जिले के मरका नामक ग्राम में हुआ था। बाँदा उत्तर प्रदेश का एक जनपद है। रामशरण जी संस्कृत भाषा के समर्पित साधक थे। इन्होंने विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन भी किया। विद्वानों की परम्परा में इनका समय 1960 से 1977 तक निर्धारित किया है। इनके माता-पिता, भाई-बहन तथा बाल्यकाल के जीवन के विषय में बहुधा उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी पुष्ट प्रमाणों के आधार पर यह कहा जाता है कि डॉ. रामशरण त्रिपाठी ने जीवन के अन्तिम दिनों में प्रयाग में निवास किया था। विद्वानों के बीच समादर पाने वाली रामशरण त्रिपाठी जी की रचनाएं ही इस बात का प्रमाण हैं कि उन्होंने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक संस्कृत के प्रत्येक पक्ष की शिक्षा ग्रहण की होगी।

3.6.2 कर्तृत्व

डॉ. रामशरण त्रिपाठी के पाँच ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं– रचनानुवादरत्नाकर, सरलज्योतिर्विज्ञान, वेदान्तसार (भावबोधिनी टीका), ब्रह्मसूत्रप्रमुखभाष्यपञ्चकसमालोचनम्, कौमुदीकथाकल्लोलिनी। इनमें कौमुदीकथाकल्लोलिनी चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी से 1961 में प्रकाशित हुई है। यह रचना श्री गंगानाथ झा केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबाद से 1989 में प्रकाशित हुई। कौमुदीकथाकल्लोलिनी में 11 कल्लोलों (अध्यायों) में कौशाम्बी के राजा उदयन के पुत्र नरवाहनदत्त की जन्म से लेकर गान्धर्व-महाभिषेक तक की कथा वर्णित है।

3.6.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

रामशरण त्रिपाठी के ग्रन्थों का अध्ययन करने से यह प्रतीत होता है कि उनमें कवित्व की प्रतिभा प्रखर थी। प्रत्यय के प्रयोग से कथानक के साथ-साथ भाषा का ठीक से पाठक को ज्ञान कराना रचनाकार की एक विशेष विशेषता है। इस प्रकार की शैली केवल रावणवध महाकाव्य की रचना के समय प्रयुक्त की गई थी। कारक और समास का एकसाथ ज्ञान कराते हुए गद्य में रचना के माध्यम से अध्येता के ज्ञान को साहित्य और व्याकरण दोनों से परिपूर्ण करने वाली शैली के प्रयोक्ता रामशरण त्रिपाठी जी रहे हैं। साहित्य के माध्यम से व्याकरण के शिक्षा देना अथवा व्याकरण का वर्णन करते हुए साहित्य की शिक्षा दे देना, दोनों प्रकार की कलायें कवि की शैली में विद्यमान हैं।

3.7 अन्य गद्यकार

3.7.1 धनपाल

संस्कृत गद्य में लेखन करने वाले धनपाल का समय 10 वीं शताब्दी माना गया है। आचार्य बलदेव उपाध्याय अपनी पुस्तक 'संस्कृत साहित्य के इतिहास' में इनका समय इसी प्रकार मानते हैं। धनपाल कश्यप गोत्र में उत्पन्न जैन थे। यह मुंजराज के सभासद थे तथा भोजराज के चाचा थे। 'प्रबन्धचिन्तामणि' में इनके जीवन के बारे में उल्लेख मिलता है। इनके पिता का नाम सर्वदेव था वह भी उज्जैन के कश्यप गोत्र के ब्राह्मण थे।यह दो भाई थे, दोनों ने जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। तत्कालीन राजाओं के द्वारा इन्हें विशेष सम्मान प्राप्त था। राजा ने इनकी काव्य-प्रतिभा से प्रसन्न होकर इनको 'सरस्वती' की उपाधि दी थी।

भोजराज के दरबार में धनपाल की बहुत प्रतिष्ठा थी। उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने 'तिलकमंजरी' नामक गद्यकाव्य की रचना की। तिलकमंजरी धनपाल की रचना का एकमात्र आधार है। यद्यपि इनकी अन्य दो रचनाएं भी हैं–ऋषभपंचाशिका तथा पाइउ लच्छीव, जिसे प्राकृत लक्ष्मी कहते हैं। इन दोनों रचनाओं ने धनपाल को एक सफल कवि के रूप में उतना प्रतिष्ठित नहीं किया जितना वे साहित्य जगत् में तिलकमंजरी की रचना के कारण हुए। संस्कृत गद्य में बाणभट्ट की प्रतिभा की अलौकिकता के सामने अन्य कोई कवि आज तक सफल नहीं हो सका। बाणभट्ट की शैली ने गद्यकाव्य की एक ऐसी दिशा को प्रदर्शित किया, एक ऐसे उन्मेष का निदर्शन किया, जिसके कारण अन्य गद्य-कवि उस मार्ग पर चलने में अपना गौरव समझने लगे। धनपाल की शैली शोभन शैली है। इन्होंने बाणभट्ट के मार्ग का अनुसरण किया है। अपेक्षाकृत सुबोध शैली में तिलकमंजरी की रचना की है। धनपाल जी की शैली में दुरूहता नहीं है। भाषा प्रांजल है कठिन शब्दों के प्रति अभिरुचि नहीं है अतः शैली सुबोध है। बाणभट्ट के समान ही धनपाल भी उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के प्रयोग में निपुण दिखाई देते हैं। इनकी भाषा और शैली के विन्यास में रस प्रयोग के दर्शन हो जाते हैं। धनपाल की भाषा व्यावहारिक विषयों के यथार्थ चित्रण की क्षमता से भरपूर है।

3.7.2 वादीभसिंह

वादीभसिंह की जन्म-भूमि के उल्लेख के अभाव में इनके मूलनाम ओड्यदेव के आधार पर श्री पं.के. भुजबली शास्त्री ने इन्हें तमिल प्रदेश निवासी कहा है और वी. शेषगिरि राव ने अनुमान किया है कि वादीभसिंह मूलतः कलिंग (तेलगु) के गन्जाम के निवासी हो सकते हैं। भुजबली शास्त्री का कथन है कि तमिल निवासी होते हुए भी वादीभसिंह की साहित्यिक साधना की भुमि मैसूर प्रान्त ही थी क्योंकि मैसूर प्रान्त के अन्तर्गत कई स्थानों में उपलब्ध शिलालेख इस उपर्युक्त तथ्य के साक्षीभूत हैं।

बाण की दोनों कृतियों 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' से वादीभसिंहकृत 'गद्यचिन्तामणि' प्रभावित है क्योंकि प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रदत्त उपदेश 'कादम्बरी' के शुकनासोपदेश की छाया ही है। इसके अतिरिक्त 'गद्यचिन्तामणि' के बहुत से वर्णन-स्थल 'हर्षचरित' के अनुरूप हैं। अतः वादीभसिंह निर्विवाद रूप से बाण के परवर्ती हैं।

''कर्मकोद्रवरसेन हि मत्तः किं किमेत्यशुभधाम न जीवः'' के आधार पर उल्लेख किया है कि वादीभसिंह और वादीराज दोनों गुरूभाई थे और सोमदेव उनके गुरू थे। सोमदेव ने 'यशस्तिलकचम्पू' की रचना शकाब्द 881 तदनुसार 959 ई. में की थी तथा वादीराज ने 'पार्श्वचरित' का निर्माण शकाब्द 947 तदनुसार 1025 ई. में किया था। अतः वादीभसिंह का

समय ईसा की एकादश शताब्दी होना चाहिए। आचार्य पण्डित बलदेव उपाध्याय जी ने भी उपर्युक्त तिथि ही मानी है। वादीभसिंह दार्शनिक तथा कवि दोनों थे। 'गद्यचिन्तामणि' इनकी प्रमुख गद्यप्रबन्धात्मक रचना है। कवि ने उसी कथा को 'क्षत्रचूड़ामणि' नामक पद्यकाव्य के रूप में प्रणीत किया। दोनों ग्रन्थ एकादश लम्भों में लिपिबद्ध हैं। क्षत्रचूड़ामणि का उल्लेखनीय वैशिष्ट्य है कि इसमें कुमार जीवन्धर के जीवन-चरित के वर्णन के साथ-साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्टय का वर्णन नीतिपुरस्सर किया गया है। इस दृष्टिकोण से इस ग्रन्थ का समस्त संस्कृत वाङ्मय में अद्वितीय महत्त्व है। इस ग्रन्थ का मूलरूप में प्रकाशन सर्वप्रथम टी.एस. कुप्पूस्वामी तथा पं. मोहनलाल जी ने किया है।

वादीभसिंह की दोनों रचनायें 'गद्यचिन्तामणि' और 'क्षत्रचूड़ामणि' पूर्ववर्ती कवियों कालिदास, सुबन्धु, बाण, दण्डी आदि की कृतियों से प्रभावित हैं। कवि ने क्लिष्ट अलंकृत गद्य-शैली में 'गद्यचिन्तामणि' का प्रणयन किया है। यह काव्य 'क्षत्रचूड़ामणि' के समान ही एकादश लम्भों में विभक्त है।

इस काव्य में सानुप्रासिक समासान्त पदावली एवं विरोधाभास और परिसंख्या आदि अलंकारों का चमत्कार सर्वथा दर्शनीय है। काव्य की शब्दगत सुषमा को सुरक्षित रखने के लिए कवि ने पुनरुक्ति से बचने हेतु नये-नये शब्दों का सृजन किया है ।

'गद्यचिन्तामणि' की भाषा की प्रवाहयुक्तता अभीष्ट रस की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध होती है। प्रस्तुत काव्य की इन्हीं विशेषताओं का उल्लेख करते हुए इसके प्रथम सम्पादक पं0 कुप्पूस्वामी ने कहा है कि यह काव्य पदों की सुन्दरता, श्रवणीय शब्दों की रचना, सरल कथासार, चित्त को आश्चर्य में डालने वाली कल्पनाएं और हृदय में प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले धर्मोपदेश आदि से सुशोभित है।

"अस्य काव्यपथे पदानां लालित्यं, श्राव्यः शब्द-सन्निवेशः, निरर्गला वाग्वैखरी, सुगमः कथासारागमः, चित्त-विस्मापिकाः कल्पनाश्चेतः प्रसादजनको-धर्मोपदेशो ..... विलसन्ति विशिष्टगुणाः।"

काव्यशास्त्रीय सभी नौ रसों का 'गद्यचिन्तामणि' में परिपाक सम्यक् रीति से हुआ है। इस गद्यप्रबन्ध का अंगी रस शान्त है और समस्त शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और अद्भुत शेष अन्य रस स्थान-स्थान पर अपनी गरिमा प्रकट करते हैं। कथा के नायक की गन्धर्वदत्ता आदि आठ नई नवेली वधुएं हैं। उनके साथ पाणिग्रहणोपरान्त शृंगार रस के संयोग तथा वियोग उभय पक्ष का परिपाक हुआ है, पर कवि ने वर्णन में अश्लीलता नहीं आने दी है।

बोध प्रश्न 3

1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (√) कथन का चयन कीजिए –

   i) 'तिलकमंजरी' के रचयिता वादीभसिंह हैं – ( )

   ii) 'गद्यचिन्तामणि' के रचयिता धनपाल हैं – ( )

   iii) 'क्षत्रचूड़ामणि' वादीभसिंह की रचना है – ( )

   iv) वादीभसिंह का समय ईसा की एकादश शताब्दी है – ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

   i) कौमुदीकथाकल्लोलिनी में .... कल्लोल हैं।

   ii) धनपाल का समय .... है।

   iii) धनपाल के पिता का नाम .... था।

   iv) गद्यचिन्तमणि का अंगी रस .... है।

अभ्यास प्रश्न

i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए –

   क) विश्वेश्वर पाण्डेय

   ख) रामशरण त्रिपाठी

   ग) धनपाल

3.8 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने जाना कि बाणभट्ट के पश्चात् संस्कृत गद्य की चली आ रही विशाल परम्परा में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अम्बिकादत्त व्यास जी ने संस्कृत गद्य लेखन की एक नई विधा में उपन्यास का लेखन करके सम्पूर्ण साहित्य जगत् में मानक स्थापित किया। उनके द्वारा रचित उपन्यास का नाम 'शिवराजविजय' है। इनकी भाषा सहज, सरल और मनोहर है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य ने भी विद्योदय पत्रिका का सम्पादन करने के साथ-साथ प्राप्तपत्रम् में गद्य-लेखन करके पाठक जगत् को एक नवीन लाभ पहुंचाया। इसके अतिरिक्त विद्योदय पत्रिका मे लिखे निबन्धों के संकलन के रूप में पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने भट्टाचार्य जी के निबन्धों का संकलन 'प्रबन्धमंजरी' नामक शीर्षक से प्रकाशित किया। हृषीकेश भट्टाचार्य बांग्ला भाषा के ज्ञाता होते हुए साहित्य मर्मज्ञ अनुवादक और बांग्ला व्याकरण के प्रणेता भी रहे हैं। विश्वेश्वर पाण्डेय ने 'मन्दारमंजरी' नामक एक अद्भुत गद्य ग्रन्थ की रचना की जो संस्कृत जगत् के विद्वानों में आदर का पात्र बनी। आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय की शैली और उनकी लेखन कला से आचार्य परम्परा से लेकर पाठक परम्परा तक सभी प्रशंसक बने। संस्कृत गद्य लेखन के इसी क्रम में पण्डिता क्षमाराव का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने गाँधी जी के सत्याग्रह से प्रेरित होकर सत्याग्रह गीता आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की। साथ-साथ इन्होंने लघु कथाओं का भी प्रणयन किया जिनमें कुछ प्रकाशित और कुछ अप्रकाशित रहीं। डॉ. रामशरण त्रिपाठी ने व्याकरण के माध्यम से साहित्य के शिक्षा और साहित्य के माध्यम से व्याकरण के शिक्षा देने के लिए दो ग्रन्थों की रचना की। रावणवध महाकाव्य की रचना प्रकृति इनकी रचनाओं से मेल खाती है। धनपाल ने 'तिलकमंजरी' नामक ग्रन्थ की रचना करके एक चमत्कार का अनुभव कराया है। धनपाल जी की रचना संस्कृत गद्य में प्रतिष्ठित है।

'गद्यचिन्तामणि' वादीभसिंह की रचना है जिसमें उन्होंने सुबोध शैली का प्रयोग करके बाणभट्ट से चली आ रही परम्परा का सफल संरक्षण किया है। फिर भी इनकी रचनाओं में नवीनता पाई जाती है। इस सम्पूर्ण इकाई का अध्ययन करने के बाद आप अम्बिकादत्त व्यास से लेकर वादीभसिंह तक की सम्पूर्ण गद्य परम्परा का उल्लेख कर सकेंगे।

3.9 शब्दावली

प्रतिष्ठा	–	संस्थापित
विलक्षण	–	असाधारण
परम्परागत	–	पूर्वागत
प्रेरणा	–	प्रेरित करना
प्रवीण	–	कुशल
आराधना	–	उपासना
अलौकिक	–	अद्‌भुत, लोक में सर्वोत्तम
उत्कृष्ट	–	श्रेष्ठ, प्रशंसनीय
प्रांजल	–	सीधा, सरल
प्रकाण्ड	–	योग्य, निपुण
उदात्त	–	उन्नत

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी
2) संस्कृत साहित्य का इतिहास –वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी
3) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ शिवमूर्ति शर्मा , दया पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद
4) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – कपिलदेव, द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, कटरा, इलाहाबाद।
5) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।

3.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) असत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य
2) i) अष्टमी (ii) घटिकाशतक (iii) दो
3) i) आर्यभाषासूत्रधार पण्डित अम्बिकादत्त व्यास की रचना है।
   ii) शिवराजविजय के रचयिता अम्बिकादत्त व्यास हैं।
   iii) विश्वेश्वर पाण्डेय का जन्म अल्मोड़ा में हुआ था।
   iv) अलंकार-कौस्तुभ विश्वेश्वर पाण्डेय की रचना है।
   v) मन्दारमंजरी के लेखक विश्वेश्वर पाण्डेय हैं।

बोध प्रश्न 2

1) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य
2) (i) 18 (ii) पण्डिता क्षमाराव (iii) खण्डकाव्य (iv) हृषीकेश भट्टाचार्य (v) क्षमाराव

बोध प्रश्न 3

1) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

2) (i) 11 (ii) 10वीं शताब्दी (iii) सर्वदेव (iv) शान्त

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखे।

इकाई 4 नीति और लोककथाएं

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- संस्कृत साहित्य के नीतिकारों का परिचय बता सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य की प्रमुख नीतियों की विशेषताएं समझा सकेंगे।
- नीतियों का उद्भव कब हुआ तथा नीतिपरक कथाएं किन-किन ग्रन्थों में हैं, इन्हें आप भली-भाँति समझा सकेंगे।
- उपदेशपरक नीति कथाओं की रचना करके कवियों ने जनमानस को व्यावहारिक नीतिशास्त्र बताया है, इस तथ्य का आप भली-भाँति विश्लेषण कर सकेंगे।
- मानव व्यवहार के अतिरिक्त पशु-पात्र प्रधान कथाओं के द्वारा भी समाज को नीति बताने वाली कथाएं लिखी गई हैं, उन कथाओं का आप परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य में कवियों ने लोककथाओं के माध्यम से रुचिकर संवादों में व्यावहारिक नीतिशास्त्र का उपदेश किया है, आप इसका उल्लेख कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में वैदिक युग से ही नीतिपरक उपदेशों की परम्परा चली आ रही है, जिसमें विभिन्न मनुष्यों ने अपने अनुसार नीतिकथाओं के विधानों एवं नीतिवचनों के वर्णन किए हैं। इस इकाई के अन्तर्गत आप संस्कृत वाङ्मय में वर्णित नीतियों का अध्ययन करेंगे। वस्तुतः नीति के उद्भावक ब्रह्मा और प्रतिष्ठापक विष्णु हैं। कालान्तर में मध्यकाल से लेकर आधुनिक युग तक नीतियों का अत्यधिक प्रसार हुआ है, जिनमें शुक्रनीति, चाणक्यनीति, विदुरनीति, पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि नीतियाँ प्रमुख व प्रसिद्ध हैं। विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र में पशु-पात्रों का चयन करके सभी भागों में अत्यन्त व्यावहारिक नीतिशास्त्र की रचना की गई है।

पंचतन्त्र की कथाएं पशुओं में मानवोचित क्रियाकलापों का दर्शन कराती हैं। पंचतन्त्र के आधार पर नारायण पण्डित ने हितोपदेश नामक कथा-ग्रन्थ की रचना की जिसमें लोक कथाओं के माध्यम से उन्होंने समाज को शिक्षित करने का प्रयास किया। हितोपदेश के भी चार भाग किए गए जिनमें विभिन्न रूप से लोककथाएं ,कूटनीतियाँ आदि समाहित की गई हैं। इस प्रकार वैदिक युग से लेकर सिद्धान्तपरक नीतियों की रचना के अतिरिक्त आधुनिक काल में लोककथाओं का विकास वेतालपच्चीसी तथा सिंहासनबत्तीसी नामक ग्रन्थों में रुचिकर कथाओं के माध्यम से व्यावहारिक नीतिशास्त्र का उपदेश पदे-पदे दृष्टिगोचर होता है। पुरुष-परीक्षा नामक कथाग्रन्थ तो नाम से ही पुरुषों की परीक्षा का ग्रन्थ लगता है।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप वैदिक काल से नीति की उत्पत्ति का ज्ञान करते हुए कथाओं के माध्यम से किस प्रकार संस्कृत साहित्य में नीतियों का उपदेश किया गया है, इसका सहज विश्लेषण कर सकेंगे ।

4.2 नीति तथा लोककथाओं का उद्भव और विकास

नीति शब्द 'नी' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय से जुड़कर बना है,जिसका अर्थ है जिस मार्ग (व्यवहार) से व्यक्ति और समाज का जीवन सरलता के साथ व्यतीत हो उसे नीति कहते हैं। नीति का अर्थ सही मार्ग की ओर ले जाना है, नीति का सही रूप में पालन करने से व्यक्ति एवं समाज दोनों का कल्याण होता है।

नीति के अर्थ को हम कई प्रकार से जान सकते हैं। मनुष्य जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधन रूप में जिन बातों की आवश्यकता है, वही नीति है। समाज में रहने वाले व्यक्ति, वर्ग, जाति आदि भिन्न-भिन्न घटक हैं। यहाँ रहकर परस्पर उनको कैसा व्यवहार करना चाहिए इसके कुछ विशेष नियम होते हैं, वही नीति है। चार पुरुषार्थों– धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन्हें प्राप्त करने के उपायों का निर्देश जिसके द्वारा होता है वही नीति है। नीति शब्द का अर्थ होता है ले जाना, पहुँचाना, दिग्दर्शन कराना, नेतृत्व करना तथा उपायों को बतलाना। नीतिवचनों के अनुसार यदि मनुष्य व्यवहार करता है तो वह अभीष्ट फल प्राप्त करता है, मनुष्य यदि नीति के विरुद्ध आचरण करता है तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हो जाता है। नीतिशास्त्र के ज्ञाता चाणक्य का सर्वप्रथम वाक्य है– **'सुखस्य मूलं धर्मः'** सुख का मूल आधार धर्म है इसलिये सबसे उत्तम नीति धर्माचरण ही है, क्योंकि संसार का प्रत्येक प्राणी सदैव सुख की ही आकाँक्षा रखता है और नीति का सहारा भी वह केवल अपने सुख के लिए ही करता है। ऋग्वेद में नीति का प्रयोग अभीष्ट फल की प्राप्ति से है–**'ऋजुनीति नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्'** (ऋक् 1/90/1) इसमें मित्र और वरुण से प्रार्थना करते हुए कहा है कि हमें ऋजु अर्थात् सरल नीति से अभीष्ट फल की सिद्धि होती है। संस्कृत भाषा में नीति साहित्य का विशाल भण्डार है। इसमें नीति उपदेशों का संग्रह है, नीतिशास्त्र के उद्भावक परमपिता ब्रह्मा, प्रतिष्ठापक विष्णु और प्रवर्तक शंकर हैं। वैदिक संस्कृत साहित्य में नीति-वचनों का प्रचुर भण्डार पड़ा है वहीं दूसरी ओर लौकिक संस्कृत साहित्य में पुराणों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों एवं विभिन्न नाटकों में भी भिन्न-भिन्न धाराओं से परिपूर्ण नीति का भण्डार दृष्टिगोचर होता है। नीति-वचनों के विशेष संग्रह वाल्मीकीय रामायण के सातवें काण्ड में भरे पड़े हैं। महाभारत में भी उद्योग पर्व के आठवें अध्याय में महात्मा विदुर द्वारा कथित नीति-वचन विदुर नीति के नाम से सुप्रसिद्ध है। इसी प्रकार महाभारत के ही भीष्म पर्व के 25वें तथा 42वें अध्याय में सम्पूर्ण विश्व में विख्यात श्रीमद्भगवद्गीता तथा योगशास्त्र के साथ-साथ ब्रह्मविद्या से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण नीतिशास्त्र है। महाभारत के शान्ति पर्व का वर्णित राजधर्म तो राजनीति ही है, इन समस्त नीतियों की चर्चा परवर्ती नीति ग्रन्थों में पदे-पदे उद्धृत की गई,

जैसे– विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र और हितोपदेश आदि में भी महाभारत की नीतियों की चर्चा है। भारतीय इतिहास के महामनीषी चाणक्य ने अपने ग्रन्थ कौटिल्य अर्थशास्त्र के अन्तर्गत नीति-वचनों का वर्णन किया है, इसके अतिरिक्त चाणक्यनीति, चाणक्यनीतिदर्पण और चाणक्यनीतिसूत्र आदि ग्रन्थों में भी उनके नीति वचनों का संग्रह है।

वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक संस्कृत साहित्य में राजनीति, धर्मनीति आदि का सृजन प्रणयन तो हुआ किन्तु शुक्र, विदुर, चाणक्य, भर्तृहरि आदि प्रमुख नीतिकारों ने नीति सिद्धान्तों के अनुसरण में वर्णन की प्रधानता रखी। इसके अलावा नीति साहित्य में एक अलग प्रकार की विधा के अन्तर्गत उपदेशक नीतिकथाओं के माध्यम से, पशु पात्रों के संवादों के माध्यम से रुचिकर कथाओं को आधार बनाते हुए विष्णुशर्मा ने पंचतन्त्र में नीति का सृजन किया। विष्णुशर्मा का पंचतन्त्र संस्कृत के कथासाहित्य के अन्तर्गत उपदेशप्रद पशुपात्र प्रधान कथाग्रन्थ है। सामाजिक सरोकारों की अनुभूति के साथ-साथ मनुष्य और प्रकृति के किस प्रकार के सम्बन्ध हैं या मनुष्य की भाँति पशुओं का भी समाज किस तरह अपने भावों को प्रकट करता है, किन-किन नियमों के अनुसार जीवन की सफलताओं के दर्शन करता है। इस तरह के नीतिपरक रुचिकर तथ्य विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र, हितोपदेश और कथासरित्सागर में तो पाए ही जाते हैं, प्रसिद्ध लोककथाओं में नीतियों का विकास संस्कृत की दो कथाओं में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है – वेतालपंचविंशतिका तथा सिंहासनद्वात्रिंशिका। यह दोनों संस्कृत की लोककथाएं हैं। इन्हें हिन्दी में सिंहासनबत्तीसी तथा वेतालपच्चीसी कहते हैं। इस प्रकार आपने देखा कि नीति का उद्भव मानवीय मूल्यों के मध्य तो हुआ ही है बल्कि कवियों ने पशुओं के संवाद और उनकी जीवन शैली में भी नीतियों का सृजन किया है। अतः नीतियों का ज्ञान करने के साथ-साथ लोककथाओं के माध्यम से भी नीतियों को भली-भाँति जानने के लिए हमें सर्वप्रथम पंचतन्त्र नामक ग्रन्थ का सिंहावलोकन करना चाहिए।

4.3 पंचतन्त्र

संस्कृत के कथासाहित्य में यह ग्रन्थ पशु-पात्रों से प्रधान रूप से सुशोभित किया गया है। वैदिक साहित्य, महाभारत तथा बौद्ध और जैन साहित्य में भी इस ग्रन्थ के विकास के बीज हैं। इस ग्रन्थ में विष्णुशर्मा ने पशुओं में मानवोचित क्रियाकलाप का दर्शन कराया है। पंचतन्त्र के अध्ययन से ही पता चल जाता है कि इसके रचयिता व्यावहारिक नीतिशास्त्र के अपार ज्ञाता थे। इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण कथाओं में पशु-पात्रों के संवादों का ही अध्ययन किया जाता है, इनमें मानव क्रिया-कलापों का पूरा-पूरा आरोप दिखाई देता है। सम्भवतः छान्दोग्य उपनिषद् में श्वानों की कथा, जिसमें सभी श्वान अपने एक श्वान नेता की तलाश करते हैं, ऐसी कथा भी पंचतन्त्र की रचना में प्रेरणा बनी होगी। नाम से ही लगता है कि पंचतन्त्र के 5 भाग होंगे। सम्पूर्ण ग्रन्थ पाँच तन्त्रों में उपलब्ध है– मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलुकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारकम्। पंचतन्त्र अपने इन्हीं पाँच भागों में अनेक कथाओं के माध्यम से व्यावहारिक नीतिशास्त्र का प्रदर्शन करता है।

मित्रभेद के अन्तर्गत एक चतुर श्रृगाल के द्वारा पिंगलक नामक सिंह और संजीवक नामक वृषभ के बीच मित्रता में फूट डालने के लिए मुख्य कथा का सृजन किया गया है। इसमें राजनीति से सम्बन्धित विवादों के साथ-साथ पशु पक्षियों के बीच मनोरंजक कथाएं प्राप्त होती हैं। इसमें कुल 22 कथाएं हैं– पिंगलक, संजीवक-दमनक कथा, कीलोत्पाटी वानर की कथा, श्रृगाल और दुंदुभी की कथा, दन्तिल और गोरम्भ की कथा, आषाढ भूति-प्रतिभूति की कथा ,गौरैया और बन्दर की कथा, धर्म बुद्धि और पाप बुद्धि की कथा, कृष्ण सर्प एवं नकुल की कथा, राजा और उसके सेवक वानर की कथा आदि कुल प्रमुख 22 कथाएं हैं। इन

कथाओं में लोकरंजन के साथ-साथ नीतिपरक उपदेशों की प्राप्ति भी सहज हो जाती है। मित्रसम्प्राप्ति नामक भेद के अन्तर्गत चित्रग्रीव नामक कपोत, हिरण्यक नामक मूषक, लघुपतनक नामक काक, चित्रांग नामक हरिण, मन्थरक नामक कच्छप की कथाएं मुख्य रूप से कही गई हैं। इन कथाओं में मित्र संग्रह के आकर्षक रूप का वर्णन किया गया है। काकोलुकीय नामक पंचतन्त्र के तीसरे तन्त्र में काक और उल्लू के जन्मजात बैर भाव के दृष्टान्त के द्वारा युद्ध और सन्धि के बहुत ही रुचिकर सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। इसके अन्तर्गत कुल 19 कथाओं के वर्णन प्राप्त होते हैं। लब्धप्रणाश नाम के चौथे तन्त्र में रक्तमुख नामक वानर तथा करालमुख नाम के मगर की कथा के द्वारा उपलब्ध वस्तु के नष्ट हो जाने की स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए समाज को नीतिपरक शिक्षा प्रदान की गई है। इस तन्त्र में कुल 12 कथाएं मिलती हैं– वानर तथा मगर की मैत्री कथा से लेकर सियार और सिंह की कथा तथा कुत्ते की कथा के साथ इस तन्त्र का वर्णन समाप्त किया गया है। अपरीक्षितकारकम् नामक पंचतन्त्र के पाँचवे तन्त्र में बताई गई कथाएं हमें यह शिक्षा देती हैं कि बिना सोचे समझे किए गए कार्यों का परिणाम सफल और सुखदाई नहीं होता। अतः कोई भी कार्य सोच समझ कर करना चाहिए इन्हीं से सम्बन्धित कुल 14 कथाएं इस तन्त्र में बताई गई हैं। जिसमें प्रथम कथा मणिभद्र नामक श्रेष्ठी तथा नापित की है, अन्तिम कथा भारुंड नामक पक्षी की है। पंचतन्त्र नामक कथाग्रन्थ बहुत ही लोकप्रिय रहा है। भारत के अलावा भी इसकी वाचनाएं प्राप्त होती हैं, जिसमें तन्त्राख्यायिका पंचतन्त्र की कश्मीरी वाचना कही जाती है। दक्षिण भारतीय पंचतन्त्र भी उपलब्ध होता है, नेपाली पंचतन्त्र भी पाया जाता है। इस वाचना के अन्तर्गत गद्य और पद्य दोनों का ही अस्तित्व प्राचीन काल से विद्यमान था। पंचतन्त्र का हितोपदेश नामक संस्करण ईसा की नवीं शताब्दी के आस-पास नारायण भट्ट नामक विद्वान् ने बनाया था इसी के आधार पर उन्होंने हितोपदेश नामक लोकप्रिय कथाग्रन्थ का प्रणयन किया। अतः पंचतन्त्र नामक नीतिप्रद कथाग्रन्थ का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेने के पश्चात् अब आप आगे हितोपदेश का अध्ययन करके दोनों कथाग्रन्थों का प्रतिपाद्य बता सकेंगे।

4.4 हितोपदेश

यह बहुत लोकप्रिय और व्यापक कथाग्रन्थ है। इसकी रचना पंचतन्त्र के आधार पर उपदेशपरक कथाग्रन्थ के रूप में की गई है। नारायण पण्डित नामक विद्वान् ने इसकी रचना की है जो राजा धवलचन्द्र के आश्रित बताए जाते हैं। वस्तुतः यह रचना पंचतन्त्र पर ही आधारित है किन्तु पंचतन्त्र के मूल कलेवर में पर्याप्त परिवर्तन करते हुए कवि ने हितोपदेश के कलेवर को चार भागों में बाँटा है– मित्रलाभ, सुहृदभेद, विग्रह, सन्धि। इन्हीं चार भागों के अन्तर्गत रचनाकार के द्वारा 17 नवीन कथाओं का सन्निवेश करते हुए 7 पशुपात्र प्रधान कथाएं, 5 कूटनीतिमूलक कथाएं तथा तीन लोककथाश्रित और दो उपदेशात्मक कथाएं लिखी गई हैं। बालकों को कथा के द्वारा नीति की शिक्षा देना ही हितोपदेश का लक्ष्य है– **'कथाच्छालेनबालानां नीतिस्तदिह कथ्यते'**। इस उद्देश्य की पूर्ति में नारायण पण्डित सर्वदा सफल भी हैं। एक ओर हितोपदेश नीतिकथा के माध्यम से अनुशासित जीवन, सफल जीवन, अनिन्दित जीवन जीने का मार्ग सिखाता है तो दूसरी ओर हितोपदेश संस्कृत शिक्षण की अद्भुत पुस्तक मानी गई है। यूरोप में अनेक भाषाओं में हितोपदेश का किया गया अनुवाद इस बात का प्रमाण है। प्रस्तावना को लेकर मित्रलाभ में कुल 10 वर्णन हैं जिनमें नौ कथाएं हैं। लघुपतनक नाम के कौवे की कथा, प्रथम कथा है तथा कर्पूरतिलक नामक हाथी की कथा अन्तिम कथा है। हितोपदेश के द्वितीय भाग सुहृदभेद में कुल नौ कथाएं मिलती हैं जिनमें वर्धमान नामक वणिक की कथा से लेकर टिटिहरी के जोड़े तथा समुद्र की कथा का वर्णन पाया जाता है। तृतीय भाग विग्रह के अन्तर्गत भी 10 कथाएं हैं

जिनमें हिरण्यगर्भ नामक राजहंस, चित्रवर्णन नामक मयूर तथा दीर्घमुख नामक बगुले की कथा से प्रारम्भ करके चूड़ामणि नामक क्षत्रिय,नापित तथा भिक्षुक की कथा के साथ तीसरे भाग का वर्णन समाप्त होता है। हितोपदेश के चतुर्थ भाग सन्धि में कुल 13 कथाएं हैं जिनमें प्रथम कथा हंस और मयूर के मेल की है। इसके अलावा अन्तिम तेरहवीं कथा माधव नामक ब्राह्मण और उसके द्वारा पालित नेवले की है।

बोध प्रश्न 1

1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (√) कथन का चयन कीजिए –

   i) पंचतन्त्र के रचयिता नारायण पण्डित हैं – ( )

   ii) पंचतन्त्र का विभाजन पाँच भागों में हुआ है – ( )

   iii) मित्र सम्प्राप्ति पंचतन्त्र का भाग नहीं है – ( )

   iv) नीति का अर्थ अभीष्ट फल की प्राप्ति कराना है, ऐसा ऋग्वेद का कथन है– ( )

   v) विष्णुशर्मा ने हितोपदेश की रचना की है – ( )

   vi) पशुपात्र प्रधान कथाग्रन्थ का नाम पंचतन्त्र है – ( )

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

   i) पिंगलक, दमनक कथा का वर्णन .... में है।

   ii) राजा और उसके सेवक वानर की कथा का वर्णन .... में है।

   iii) चित्रग्रीव नामक कपोत की कथा का वर्णन .... में है।

   iv) काक और उलूक का तात्पर्य .... है।

अभ्यास प्रश्न

i) नीति तथा लोककथाओं के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

ii) पंचतन्त्र कथाग्रन्थ में वर्णित विषय अत्यन्त संक्षेप में लिखिए।

4.5 वेतालपंचविंशतिका

पंचतन्त्र के बाद पशु पक्षियों की कहानियाँ लुप्तप्राय हो गईं। बृहत्कथा के बाद भी कोई उस परम्परा का अनुगामी ग्रन्थ नहीं दिखा। रोचक लोककथाओं का एक सुन्दर तथा सुव्यवस्थित ग्रन्थ वेतालपच्चीसी उपलब्ध होता है जिसे संस्कृत में वेतालपंचविंशतिका कहते हैं। विद्वानों की परम्परा में इसे स्वतन्त्र कथाग्रन्थ माना गया है। अनेक मतों में यह बृहत्कथामंजरी तथा कथासरित्सागर से प्रभावित रचना मानी जाती है। वेतालपच्चीसी की कहानियों का सबसे प्रचलित रूप 11वीं शताब्दी के क्षेमेन्द्र तथा सोमदेव के ग्रन्थ में पाया जाता है। वेतालपच्चीसी की रचना जम्भलदत्त ने की जो पूर्णतया गद्य में है। वेतालपच्चीसी की कथाएं अत्यन्त रोचक, बुद्धिवर्धक तथा कौतूहल का उत्पादन करने वाली हैं। वेतालपंचविंशतिका में विक्रमसेन के बौद्धिक उत्कर्ष से प्रकाशित 25 कहानियाँ निबद्ध की गई हैं। इस लोककथा ग्रन्थ के प्रारम्भ और उपसंहार की संरचना इस प्रकार देखी जा सकती है –

राजा त्रिविक्रमसेन को एक भिक्षु प्रतिदिन एक फल लाकर दिया करता था जिसे वे अपने कोशाध्यक्ष को दे देते थे। यह क्रम 10 वर्षों तक चलता रहा। एक दिन राजा को संयोगवश ज्ञात हो गया कि प्रत्येक फल में एक-एक रत्न निहित रहता है। कोषाध्यक्ष से पता लगाने

पर बात सच निकली। राजा का हृदय उस भिक्षु की असाधारण राजभक्ति को देखकर उसकी ओर आकृष्ट हो गया। एक दिन राजा द्वारा प्रणाम कर इस मूल्यवान वस्तु का कारण पूछे जाने पर वह भिक्षु राजा को एकान्त में ले गया और कहने लगा कि मुझे एक मन्त्र की साधना करनी है जिसमें किसी वीर पुरुष की सहायता की आवश्यकता है। आपसे उपयुक्त वीर कौन मिलेगा। आगामी कृष्ण चतुर्दशी को मैं श्माशान घाट पर वट वृक्ष के नीचे प्रतीक्षा करूँगा। अवसर आते ही राजा वहाँ के लिए निकल पड़े। श्मशान पहुँचकर उन्होंने भयंकर दृश्य देखे। राजा ने भिक्षु के पास जाकर कहा मैं आ गया हूँ अपना काम बताओ। भिक्षु ने कहा कि राजन् यहाँ से दक्षिण दिशा में जाइए बहुत दूर जाने पर शिंशपा नाम का एक वृक्ष मिलेगा, उस वृक्ष की डाल से एक मृतक का शरीर लटक रहा है, उसे आप यहाँ लाकर रख दीजिए और मेरा काम पूर्ण करिए।

दृढ प्रतिज्ञा वाले राजा ने शिंशपा वृक्ष के पास पहुँचकर उसकी डाल से शव को गिराया और जैसे ही उसे लाना शुरू किया पुनः वह शव शरीर उसी डाल पर जा लटका और अट्टहास करने लगा। ऐसा देखकर राजा ने समझ लिया कि इसके शरीर में कोई बेताल अधिष्ठित है। अगली बार पूर्ण साहस से राजा ने दोबारा उस शव को डाल से गिराया और अपने कन्धे पर लेकर चल पड़े। रास्ते में उस शरीर में अवस्थित बेताल ने राजा को एक उलझन भरी कहानी सुनाई और कहा कि तुम इसका समाधान कर दो नहीं तो तुम्हारे सिर के सौ टुकड़े हो जाएंगे। राजा ने समाधान किया, पुनः वह बेताल उसी स्थान पर लौट गया। राजा फिर उस वृक्ष के पास गए और उसके शरीर को लाने का प्रयास करते रहे ऐसा करते करते 23 बार तक यह क्रम चला। चौबीसवीं बार ऐसी उलझन भरी कहानी बेताल ने सुनाई कि राजा उसका समाधान नहीं कर सका। राजा शव को लेकर चलता चला जा रहा था पुनः बेताल ने सोचा कि यह समाधान नहीं कर पा रहा है तो राजा से उसने कहा कि तुम इस अंधेरी रात में श्मशान में बार-बार आने-जाने के कष्ट को झेलते रहे और डरे नहीं इसलिए मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ। तुम्हारी दृढता और धैर्य से प्रसन्न होकर मैं इस शव से बाहर हो जाता हूँ। तुम इस शव शरीर को लेकर भिक्षु के पास जाओ । वह भिक्षु इस शरीर में आज रात मेरा आवाहन करके पूजन करेगा फिर वह तुम्हें साष्टांग प्रणाम करने के लिए कहेगा ताकि वह तुम्हारी बलि चढा दे। हे राजा! तुम कहना कि मुझे साष्टांग प्रणाम करने नहीं आता है। पहले तुम साष्टांग प्रणाम करके दिखाओ तब मैं उसका अनुकरण करके करूँगा। ऐसा होते ही जब भिक्षु साष्टांग प्रणाम करेगा तो तुम उसका सिर काट देना। इसलिए जिन सिद्धियों की इच्छा वह भिक्षु करता है वह सारी सिद्धियाँ तुम्हें प्राप्त हो जाएंगी। ऐसा कहते हुए बेताल शव से निकलकर बाहर चला गया और राजा ने उस शव शरीर को भिक्षु के पास लाकर रख दिया। राजा ने वेताल की कथा अनुसार ही सारे कार्य किए और भिक्षु के सिर की बलि चढा दी। इस पर श्मशान के निवासी सारे भूत, प्रेत और बेताल प्रसन्न हुए और राजा की बहुत प्रशंसा की। उनसे वर माँगने को कहा फिर राजा ने कहा कि आपने मेरी सहायता की है। अतः यह पच्चीसों कथाएं संसार में सुप्रसिद्ध हों यही वरदान माँगता हूँ। प्रसन्न होकर बेताल ने कहा कि यह पच्चीसों कथाएं संसार में वेतालपंचविंशतिका के नाम से सुप्रसिद्ध और समादृत होंगी।

4.6 सिंहासनद्वात्रिंशिका

इस कथाग्रन्थ को सिंहासनबत्तीसी भी कहते हैं। ऐसी किंवदन्ती है कि विक्रमादित्य को देवराज इन्द्र ने एक दिव्य सिंहासन उपहार में प्रदान किया था जिसमें दिव्य आत्माओं से अधिष्ठित 32 पुत्तलियाँ लगी हुई थीं। शालिवाहन के द्वारा पराजित होने के बाद अन्तिम बार उन्होंने सिंहासन पर बैठकर पुत्तलियों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि मेरे देहावसान के 500 वर्षों के बाद भोज नामक राजा पृथ्वी के गर्भ से इस सिंहासन को प्राप्त कर लेगा

और इस पर बैठने के लिए उत्सुक होगा। तुम सभी उससे मेरे महान् कर्मों का वर्णन करोगी और उसके बाद मुक्त होकर स्वर्ग में अपना स्थान ग्रहण करोगी। इतना कहकर वह सिंहासन से उतर पड़े और उसे धरती के अन्दर छिपा दिया गया। 11वीं शताब्दी ई. में धारा नरेश भोजराज एक दिन अपने मन्त्री के साथ शिकार खेलने के क्रम में जंगल में घूम रहे थे तभी एक टीले के नीचे जमीन के अन्दर गड़े हुए सिंहासन का पता लगने पर उन्होंने उसे निकलवाया और बड़े ही धूमधाम से उसका पूजन किया। शान्ति पाठ ,वेद पाठ और ब्राह्मण भोजन जैसे माँगलिक विधि-विधानों के बाद जब सिंहासन पर बैठने के लिए उन्होंने पैर बढाया तभी पहली सीढ़ी पर खड़ी पुत्तली ने उन्हें रोकते हुए विक्रमादित्य के जन्म और उनकी दैवी सिद्धियों के सम्बन्ध में आख्यान कह सुनाया और उनसे पूछा कि क्या आप समझते हैं कि उनका कोई भी गुण सौवें अंश में भी आप में विद्यमान है। जिससे आप इस सिंहासन पर बैठकर शासन कर पाएंगे? पुत्तली की बात सुनकर राजा भोज आश्चर्यचकित हो गए। वे वापस लौट गए, किन्तु बार-बार ऐसा होने पर और बार-बार पुत्तलियों द्वारा विक्रमादित्य की गाथा सुनाए जाने पर भोजराज वापस लौटते रहे। अन्त में उनके धैर्य को देखकर पुत्तलियों ने कहा कि हे राजन्! हम सभी ने अपने कर्तव्य का पालन किया अब आप इस सिंहासन पर 1 वर्ष तक बैठकर शासन कर सकते हैं। इतना कहने के बाद वे सभी पुत्तलियाँ बन्धन मुक्त होकर स्वर्ग चली गईं। इस लोककथा ग्रन्थ के भी कई संस्करण मिलते हैं जिनमें क्षेमंकर रचित जैन संस्करण प्रामाणिक माना गया है। इस कथाग्रन्थ में प्रत्येक कथा के आरम्भ तथा अन्त में श्लोकों का सन्निवेश अवश्य किया गया है। उन्हीं श्लोकों में कथाओं की विषय-वस्तु का उल्लेख किया गया है। इस कथाग्रन्थ का एक दक्षिण भारतीय संस्करण भी प्राप्त होता है। इसके गद्यभाग में सूक्तिमूलक श्लोक पाए जाते हैं।

4.7 पुरुष-परीक्षा

पुरुष-परीक्षा की रचना विद्यापति ने की है। यह उपदेशात्मक संस्कृत कथासाहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें पशु-पक्षी जैसे पात्रों के स्थान पर समसामयिक आदर्श चरित्रों को प्रस्तुत किया गया है जो कलियुग में उत्पन्न हैं। इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार का मानना है कि पुरुष वही है जिसके व्यक्तित्व में वीरता हो, सुबुद्धि हो, विद्या तथा पुरुषार्थ चतुष्टय का ठीक से समन्वय हो। यदि व्यक्ति इससे रहित है तो वह केवल पुरुष की भाँति आकार-प्रकार धारण करता है और वह बिना पूँछ और सींग के पशु ही है। पुरुष-परीक्षा नाम ही इस ग्रन्थ का अभिप्राय सिद्ध करता है। मंगलाचरण में आदिशक्ति की वन्दना करते हुए विद्यापति ने कहा है कि एकबार जब चन्द्रातपा नगरी के राजा पारावार ने अपनी सर्वगुणसम्पन्न पुत्री के अनुरूप वर के लिए विचार किया तथा मुनिवर सुबुद्धि के पास जाकर प्रश्न किया तब उन्होंने कहा कि वीरता, सुबुद्धि, सद्विद्या तथा पुरुषार्थ से युक्त पुरुष ही वास्तविक पुरुष है। ऐसे पुरुष को ही अपनी कन्या प्रदान करनी चाहिए। इसी सन्दर्भ में मुनिवर सुबुद्धि के द्वारा पुरुषों के परिचय हेतु दी गई अज्ञात कथाओं का सम्पूर्ण वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है। विद्वानों की मान्यता के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना 14वीं सदी में हुई। इस कथाग्रन्थ में चार परिच्छेद हैं– प्रथम परिच्छेद के अन्तर्गत उदाहरण कथा की कोटि में दानवीर विक्रमादित्य ,युद्धवीर कर्णाट राजकुमार मल्लदेव, दयावीर रणथम्भौर के नरेश हम्मीर देव तथा सत्यवीर चौहान वंश के नरेश चाचिक देव की कथाएं लिखी गई हैं। दूसरे परिच्छेद में कवि ने उदाहरण कथा की दृष्टि से प्रतिभासम्पन्न विशाख, मेधासम्पन्न कोकपण्डित तथा कर्णाट नरेश हरिसिंह देव के मन्त्री सुबुद्धिसम्पन्न गणेश्वर की कथाओं का वर्णन किया है। तृतीय परिच्छेद में कवि के द्वारा संविद्यकथा की दृष्टि से उदाहरण के रूप में धारा नगरी निवासी शस्त्र विद्या में निपुण सिंघल नामक क्षत्रिय धनुर्धर, शास्त्र के जानकार ज्योतिषी वाराहमिहिर, आयुर्वेद के जानकार हरिश्चन्द्र एवं

मीमांसक शबर स्वामी की कथाएं लिखी गई हैं। चतुर्थ परिच्छेद में धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष जैसे पुरुषार्थ से सम्बन्धित कथाओं का वर्णन किया गया है। धर्म के उदाहरण के लिए तत्त्वज्ञानी बोधि नामक कायस्थ, तमोगुण धार्मिक श्रीकंठ नामक ब्राह्मण तथा पापकर्म के लिए पश्चातापपूर्वक पुण्य अर्जन करने वाले राजकुमार रत्नांगद की कथाएं लिखी गई हैं। अर्थमूलक कथाओं में न्याय के द्वारा उपार्जित धन का दान एवं भोग में व्यय करने वाले धनिक की कथा के साथ-साथ कई कथाओं का वर्णन करते हुए तृष्णा से ग्रस्त एक माली की कथा का वर्णन भी किया गया है। काम कथा के अन्तर्गत अनुकूल नायक राजा शूद्रक की कथा, गौड नरेश लक्ष्मण सेन की कथा, महाराज विक्रमादित्य की कथा, धूर्त नायक शशि की कथा तथा विद्या एवं बुद्धि से सम्पन्न होने पर भी अपनी प्रेयसी पटरानी शुभ देवी के वशीभूत रहने के कारण अपने राज्य तथा प्राण को भी गंवा देने वाले महाराज जयचन्द की कथा भी प्राप्त होती है। मोक्ष कथा के अन्तर्गत भर्तृहरि की कथा, विवेकशर्मा की कथा, स्पृहा से रहित मुमुक्षु कृष्ण चैतन्य की कथा तथा लब्धसिद्धि मुमुक्षु की कथा के वर्णनों के साथ इस ग्रन्थ के वर्णन की समाप्ति हो जाती है।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

   i) वेतालपंचविंशतिका में कथाएं हैं –

      (क) 20 (ख) 22 (ग) 24 (घ) 25

   ii) विक्रमादित्य को दिव्य सिंहासन दिया था –

      (क) इन्द्र (ख) विष्णु (ग) नारद (घ) शिव

   iii) पुरुष-परीक्षा रचना है –

      (क) विद्यापति (ख) जम्भलदत्त (ग) कल्हण (घ) सुमेरु

   iv) वाराहमिहिर की चर्चा किस ग्रन्थ में है–

      (क) पुरुष-परीक्षा (ख) वेतालपंचविंशतिका (ग) हितोपदेश (घ) पंचतन्त्र

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

   i) भिक्षुक ने राजा से .... वृक्ष की डाल पर से शव लाने को कहा।

   (ii) वास्तविक पुरुष को .... होना चाहिए।

   (iii) राजा विक्रमादित्य का सिंहासन .... में पाया गया था।

   (iv) पुरुष-परीक्षा नामक ग्रन्थ की रचना .... सदी में हुई।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

   i) वेतालपंचविंशतिका को हिन्दी में क्या कहते हैं?

   ....

   ....

   ....

   ii) वेतालपंचविंशतिका की कथायें किससे सम्बन्धित हैं?

   ....

....

....

iii) राजा ने वेताल से क्या वरदान माँगा?

....

....

....

iv) पुरुष-परीक्षा ग्रन्थ के अनुसार किस प्रकार के व्यक्ति को कन्या देनी चाहिये?

....

....

....

अभ्यास प्रश्न

1) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए –

   क) वेतालपंचविंशतिका

   ख) सिंहासनद्वात्रिंशिका

   ग) पुरुष-परीक्षा

4.8 सारांश

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के पश्चात् आप वैदिक साहित्य में नीतियों के उद्भव को जानते हुए लौकिक संस्कृत में नीतिसाहित्य के अन्तर्गत सिद्धान्तपरक नीतियों के वर्णन के साथ-साथ उपदेशपरक नीतियों के बारे में भी जान चुके हैं। शुक्र नीति, विदुर नीति, चाणक्य नीति के साथ-साथ भर्तृहरि के नीतिशतकम् में भी अनेक नीतियों के वर्णन किए गए। किन्तु लौकिक संस्कृत साहित्य के कथाग्रन्थों में पंचतन्त्र के अन्तर्गत 5 भागों में विष्णुशर्मा ने अत्यन्त कला कौशल के साथ पशु पात्र प्रधान कथाओं की रचना करके सम्पूर्ण पाठक समाज को जीव जन्तुओं में मानवोचित क्रियाकलापों का दर्शन कराया है। इतना ही नहीं पंचतन्त्र की कथाओं में पशु–पक्षी, जीव–जन्तुओं के संवादों में पदे-पदे केवल व्यावहारिक शिक्षा ही प्राप्त होती है। हितोपदेश में नारायण पण्डित ने चार भागों में अनेक कथाओं की सर्जना करके समस्त पाठक पीढी को व्यावहारिक नीतिशास्त्र से अवगत कराया है। इतना ही नहीं हितोपदेश तो रुचिकर कथाओं के माध्यम से संस्कृत शिक्षण देने का बहुत ही कलात्मक कथाग्रन्थ साबित होता है। कथाओं के माध्यम से नीतियों की शिक्षा देने के क्रम में लोककथा ग्रन्थ भी संस्कृत साहित्य में कम योगदान नहीं रखते। वेतालपंचविंशतिका, सिंहासनद्वात्रिंशिका तथा पुरुष-परीक्षा नामक ग्रन्थ इस बात के साक्षी हैं। इन तीनों ग्रन्थों में निबद्ध कथाओं का अनुशीलन करने से उदीयमान पीढी को लोकनीति, कूटनीति, पुरुषार्थों की प्राप्ति तथा समसामयिक सन्दर्भ में नवचेतना प्रदान करना ही ग्रन्थकारों का सहज उद्देश्य रहा है। यही कारण है कि लोक कथाओं की भाषा सहज रूप से हृदयग्राही भी कही जाती है। गद्य में तथा पद्य में कथाओं का सृजन करके उनमें व्यावहारिक नीतिशास्त्र से सम्बन्धित तथ्यों का वर्णन करके कवियों ने जीवन में अनुशासन, चरित्र निर्माण, युद्धवीरता, दयावीरता, दानवीरता से लेकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी की प्राप्ति के साधन को कथाओं के माध्यम से जनमानस के समक्ष रखा है।

4.9 शब्दावली

वाङ्मय	–	परस्पर वाच्य वाचक से समन्वययुक्त शास्त्र
उद्भावक	–	संवर्धक
मानवोचित	–	मनुष्यों के अनुकूल, मनुष्योचित
अभीष्ट	–	इच्छित, वांछित
कलेवर	–	आकार
अनुगामी	–	अनुयायी
आकृष्ट	–	आकर्षित किया हुआ
मांगलिक	–	मंगलसूचक, सुखद
स्पृहा	–	अभिलाषा
मुमुक्षू	–	मोक्ष पाने का इच्छुक

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) संस्कृत साहित्य का वृहद् इतिहास पंचम खण्ड, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
2) संस्कृत साहित्य का इतिहास– पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी ।
3) संस्कृत साहित्य का इतिहास –वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
4) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ शिवमूर्ति शर्मा , दया पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद।

4.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य
(v) असत्य (vi) सत्य

2) (i) मित्रभेद (ii) मित्रभेद (iii) मित्रसम्प्राप्ति (iv) काकोलुकीय

बोध प्रश्न 2

1) (i) (घ) 25 (ii) (क) इन्द्र (iii) (क) विद्यापति
(iv) (क) पुरुष-परीक्षा

2) (i) शिंशपा (ii) दानवीर, धर्मवीर (iii) पृथ्वी (iv) 14वीं

3) (i) वेतालपंचविंशतिका को हिन्दी में वेतालपच्चीसी कहते हैं।
(ii) वेतालपंचविंशतिका की कथायें भिक्षुक, राजा तथा बेताल से सम्बन्धित हैं।
(iii) राजा ने बेताल से वरदान माँगा कि ये कथायें प्रसिद्ध हों तथा समाज में इनका आदर हो।
(iv) पुरुष-परीक्षा ग्रन्थ के अनुसार वीरता, सुबुद्धि, सद्विद्या तथा पुरुषार्थ से युक्त व्यक्ति को कन्या देनी चाहिये।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।